॥ श्रीहरिः ॥

श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रम्

॥ श्रीहरिः॥

निवेदन

आनन्दकन्द ब्रह्माण्डनायक लीलापुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके अनेक स्वरूप हैं। वे मदनमोहन, श्यामसुन्दर, व्रजेन्द्रनन्दन, गोपीवल्लभ, राधावल्लभ, राधारमण, गोपाल आदि विभिन्न स्वरूपोंमें भक्तोंके हृदयमें विराजते हैं। बाललीलामें गोप-गोपिकाओंके साथ गायोंकी सन्निधि भगवान् श्रीकृष्णके साथ निरन्तर रहती है। गोचारण और गोपालन उनकी बाललीलाका मुख्य अंग है। इसीलिये भक्तगण उन्हें 'गोविन्द' और 'गोपाल' के नामसे पुकारते हैं तथा इसी स्वरूपमें उनकी उपासना भी होती है।

भारतीय संस्कृतिमें गायोंका विशेष महत्त्व है। गाय भारतीय जीवनकी आधारशिला है। भगवान् श्रीकृष्णने गायोंकी सेवा, शुश्रूषा और उनका पालनकर जनसामान्यके लिये एक आदर्श उपस्थित किया है। अतः गोपालरूपमें इनकी उपासनाका विशेष महत्त्व है। उपासनाके क्रममें अपने यहाँ नाम-स्मरणकी विशेष महिमा बतायी गयी है। इसीलिये प्राचीनकालसे 'गोपालसहस्त्रनाम' के पाठकी परम्परा विशेषरूपसे चलती है। शास्त्रोंमें गोपालसहस्त्रनामके पाठकी महत्त्वपूर्ण फलश्रुति बतायी गयी है, जो यहाँ भी पाठके अन्तमें संक्षिप्तरूपसे प्राप्त

है। लौकिक तथा पारलौकिक—दोनों प्रकारके लाभ इसके पाठसे प्राप्त होते हैं। इसीलिये अनेक भगवद्भक्त साधक गोपालकी प्रसन्नताके लिये प्रतिदिन इसका पाठ करते हैं। इसके साथ ही विभिन्न प्रतिष्ठानोंमें भौतिक कामनाओंकी पूर्तिके लिये गोपालसहस्रनामका पाठ प्रायः कराया जाता है।

प्रस्तुत पुस्तकमें गोपालसहस्रनाम सानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। भगवान्‌के नामोंके अर्थ और उनके रहस्यको समझते हुए जो लोग इसका पाठ करते हैं, उन्हें विशेष आनन्दकी अनुभूति तो होती ही है, इसके साथ ही वह पाठ विशेषरूपसे फलदायी भी होता है।

व्यापारिक प्रतिष्ठानोंमें गोपालसहस्रनाम तथा श्रीसूक्त—इन दोनोंका पाठ प्रायः कराया जाता है। इसलिये सर्वसाधारणकी सुविधाके लिये गोपालसहस्रनामके साथ श्रीसूक्तका पाठ भी सानुवाद प्रकाशित किया जा रहा है।

आशा है पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

—राधेश्याम खेमका

॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रम्

पार्वत्युवाच

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शङ्करम्।
ब्रह्माण्डाखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः॥ १ ॥

पार्वती बोलीं—एक बार मनोरम कैलासपर्वतके शिखरपर विराजमान भगवान् शंकरजीसे भगवती गौरी पूछने लगीं कि आप समग्र ब्रह्माण्डके एकमात्र नाथ हैं और सृष्टि तथा संहार करनेवाले हैं॥ १ ॥

त्वमेव पूज्यसे लोकैर्ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः।
नित्यं पठसि देवेश कस्य स्तोत्रं महेश्वर॥ २ ॥

हे महेश्वर! हे देवेश! जब सभी लोग एवं ब्रह्मा, विष्णु आदि देवगण भी आपकी आराधना करते हैं, तब आप नित्य किसका स्तवन किया करते हैं?॥ २ ॥

आश्चर्यमिदमत्यन्तं जायते मम शङ्कर।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिन्धि शङ्कर॥ ३॥

हे शंकर! मुझे इसमें महान् आश्चर्य हो रहा है; अतः हे प्राणेश! हे महाप्राज्ञ! हे शिव! मेरे सन्देहका निवारण कीजिये॥ ३॥

श्रीमहादेव उवाच

धन्यासि कृतपुण्यासि पार्वति प्राणवल्लभे।
रहस्यातिरहस्यं च यत्पृच्छसि वरानने॥ ४॥
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः॥ ५॥

श्रीमहादेवजी बोले—हे पार्वति! हे प्राणवल्लभे! तुम धन्य हो, कृतार्थ हो जो कि हे वरानने! तुम इस परम रहस्यमय बातको पूछ रही हो। हे महादेवि! तुम स्त्रीस्वभावसे ही बार-बार मुझसे इस रहस्यको पूछ रही हो; इस गूढ़ रहस्यको प्रयत्नपूर्वक अति गोपनीय रखना चाहिये॥ ४-५॥

दत्ते च सिद्धिहानिः स्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत्।
इदं रहस्यं परमं पुरुषार्थप्रदायकम्॥ ६॥

यह परम रहस्य धर्म-अर्थ आदि पुरुषार्थोंको देनेवाला है। इसे किसी अनधिकारी व्यक्तिको देनेसे सिद्धिकी हानि होती है, इसलिये प्रयत्नपूर्वक गोपनीय रखना चाहिये॥ ६॥

धनरत्नौघमाणिक्यतुरङ्गमगजादिकम्।
ददाति स्मरणादेव महामोक्षप्रदायकम्॥ ७॥
तत्तेऽहं सम्प्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये।
योऽसौ निरञ्जनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः॥ ८॥
संसारसागरोत्तारकारणाय सदा नृणाम्।
श्रीरंगादिकरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति॥ ९॥

यह रहस्य स्मरणमात्रसे ही धन, रत्नसमूह, माणिक्य, हाथी, घोड़े आदि वस्तुओंको दे देता है और

महान् मोक्ष प्रदान करनेवाला है। हे प्रिये! उसी रहस्यको मैं तुम्हें बताऊँगा, एकाग्रचित्त होकर सुनो। जो चिद्रूप निर्विकार भगवान् जनार्दन हैं, वे मनुष्योंको संसारसागरसे पार उतारनेके लिये सदा श्रीरंगादि रूपोंमें तीनों लोकोंको व्याप्त करके स्थित रहते हैं॥ ७—९॥

ततो लोका महामूढा विष्णुभक्तिविवर्जिताः।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः॥ १०॥
निरञ्जनो निराकारो भक्तानां प्रीतिकामदः।
वृन्दावनविहाराय गोपालं रूपमुद्वहन्॥ ११॥
मुरलीवादनाधारी राधायै प्रीतिमावहन्।
अंशांशेभ्यः समुन्मील्य पूर्णरूपकलायुतः॥ १२॥

तथापि भगवान् विष्णुकी भक्तिसे रहित महामूर्ख लोग उनपर दृढ़ विश्वास नहीं करते। उन

निर्विकार, निराकार तथा भक्तोंके प्रिय मनोरथ पूर्ण करनेवाले नारायण श्रीहरिने ही वृन्दावनमें विहार करनेके लिये गोपालरूप धारण किया, श्रीराधिकाजीकी प्रसन्नताके लिये वेणुवादनका आश्रय लिया और अपने अंशांशोंसे समन्वित होकर षोडशकलात्मक पूर्णरूप धारण किया॥ १०—१२॥

श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान् नन्दगोपवरोद्यतः।
धरणीरूपिणी माता यशोदानन्ददायिनी॥ १३॥

श्रीकृष्णचन्द्रजी साक्षात् भगवान् थे। गोपोंमें श्रेष्ठ नन्दजी उनके पिता थे और आनन्द देनेवाली साक्षात् पृथिवीस्वरूपा यशोदा उनकी माता थीं॥ १३॥

द्वाभ्यां प्रयाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः।
ब्रह्मणाभ्यर्थितो देवो देवैरपि सुरेश्वरि॥ १४॥

हे सुरेश्वरि! [कृष्णावतारके पूर्व] देवकी तथा वसुदेव—इन दोनोंने परात्पर प्रभुसे प्रार्थना की थी

कि आपके सदृश हमारे पुत्र हो। ब्रह्मा तथा अन्य देवताओंने भी [पृथिवीका भार उतारनेके लिये] भगवान्से प्रार्थना की थी कि वसुदेवजीके द्वारा देवकीके गर्भसे आप अवतार ग्रहण करें॥ १४॥

जातोऽवन्यां मुकुन्दोऽपि मुरलीवेदरेचिका।
तया सार्द्धं वचः कृत्वा ततो जातो महीतले॥ १५॥

तब वे मुकुन्द भी पूर्वमें दिये गये वचनका पालन करनेके लिये पृथ्वीपर अवतरित हुए थे। मुरलीकी ध्वनिका विस्तार करनेवाली जो राधिका हैं, उन्हींके साथ वे नारायण पृथ्वीतलपर अवतीर्ण हुए॥ १५॥

संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम्।
एतज्ज्योतिरहं वेद्यं चिन्तयामि सनातनम्॥ १६॥

[हे देवि!] संसारसारके सर्वस्व, श्यामवर्ण, अत्यन्त उज्ज्वल कान्तिवाले, जाननेयोग्य तथा शाश्वत उसी ज्योतिका मैं चिन्तन करता हूँ॥ १६॥

गौरतेजो विना यस्तु श्यामतेजः समर्चयेत्।
जपेद्वा ध्यायते वापि स भवेत्पातकी शिवे॥ १७॥
स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पञ्चमः।
एतैर्दोषैर्विलिप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि॥ १८॥

हे शिवे! जो मनुष्य गौरतेज (श्रीराधिका)-को छोड़कर श्यामतेज (श्रीकृष्ण)-का पूजन, जप अथवा ध्यान करता है अर्थात् युगल-उपासनाकी मर्यादाको भंग करता है, वह पातकी होता है। वह ब्रह्महत्यारा, सुरापान करनेवाला, स्वर्णकी चोरी करनेवाला, [गुरुतल्पगामी] तथा इन सबसे संसर्ग रखनेवाला पाँचवाँ महापातकी होता है। हे महेश्वरि! इन दोनोंमें तेज-भेद करनेसे वह व्यक्ति इन दोषोंका भागी होता है॥ १७-१८॥

तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम्।
तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम्॥ १९॥

अतः हे महादेवि! 'युगल-उपासनाके लिये मेरी ही ज्योति राधा-माधवके रूपमें दो प्रकारकी हो

गयी'—ऐसा स्वयं श्रीगोपालने कहा है॥ १९॥

दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्तिक्यां रासमण्डले।
ततः पृष्टवती राधा सन्देहं भेदमात्मनः॥ २०॥

कार्तिक पूर्णिमाको [वृन्दावनधाममें] रासमण्डलका अवलोकनकर जब महर्षि दुर्वासाजीको मोह व्याप्त हो गया था, उस समय श्रीराधिकाजीको अपने तथा श्रीकृष्णमें भेद होनेका सन्देह उत्पन्न हुआ और उन्होंने भगवान् श्रीकृष्णसे पूछा था॥ २०॥

निरञ्जनात्समुत्पन्नं मयाधीतं जगन्मयि।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च॥ २१॥
ततो नारदतः सर्वं विरला वैष्णवास्तथा।
कलौ जानन्ति देवेशि गोपनीयं प्रयत्नतः॥ २२॥

[हे भगवन्!] मुझे ऐसा विदित है कि निर्विकार ब्रह्मसे उत्पन्न यह सम्पूर्ण जगत् मुझमें अधिष्ठित

है। तब भगवान् श्रीकृष्णने राधिकाजी तथा देवर्षि नारदजीको यह रहस्य बताया। तदनन्तर उन नारदजीसे अन्यान्य वैष्णवोंने इस रहस्यको जाना और कलियुगमें अन्य लोग भी इसे जान गये। हे देवेशि! इस रहस्यको प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये॥ २१-२२॥

शठाय कृपणायाथ दाम्भिकाय सुरेश्वरि।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद्यत्नेन गोपयेत्॥ २३॥

हे सुरेश्वरि! जो इस रहस्यको दुष्ट, कृपण अथवा पाखण्डी व्यक्तिको बताता है; वह ब्रह्महत्याके समान पापका भागी होता है, अतएव प्रयत्नपूर्वक इसे गोपनीय रखना चाहिये॥ २३॥

पाठका विनियोग

अस्य श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीगोपालो देवता, कामो बीजम्, माया शक्तिः, चन्द्रः कीलकम्, श्रीकृष्णचन्द्रभक्तिरूपफलप्राप्तये श्रीगोपाल-सहस्रनामजपे विनियोगः॥

इस श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रके ऋषि नारदजी हैं, छन्द अनुष्टुप् है, श्रीगोपालजी इसके देवता हैं, काम इसका बीज, माया इसकी शक्ति है तथा चन्द्र इसका कीलक है। भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रके भक्तिरूपी फलकी प्राप्तिके लिये श्रीगोपालसहस्रनामके जपमें इसका विनियोग है।

अथवा

ॐ ऐं क्लीं बीजम्, श्रीं ह्रीं शक्तिः, श्रीवृन्दावननिवासः कीलकम्, श्रीराधाप्रियं परं ब्रह्मेति मन्त्रः, धर्मादिचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ ऐं क्लीं इसका बीज, श्रीं ह्रीं शक्ति, श्रीवृन्दावननिवास कीलक और श्रीराधाप्रिय परब्रह्म मन्त्र

है। धर्मादि चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिके लिये जपमें इसका विनियोग है।

करन्यास

ॐ क्लां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः—कहकर दोनों अँगूठोंका स्पर्श करे। **ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः**—कहकर दोनों तर्जनियोंका स्पर्श करे। **ॐ क्लूं मध्यमाभ्यां नमः**—कहकर दोनों मध्यमाओंका स्पर्श करे। **ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः**—कहकर दोनों अनामिकाओंका स्पर्श करे। **ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः**—कहकर दोनों कनिष्ठिकाओंका स्पर्श करे। **ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः**—कहकर दोनों करतलोंका स्पर्श करे।

हृदयादिन्यास

ॐ क्लां हृदयाय नमः—कहकर हृदयका स्पर्श करे। **ॐ क्लीं शिरसे स्वाहा**—कहकर सिरका स्पर्श करे। **ॐ क्लूं शिखायै वषट्**—कहकर शिखाका स्पर्श करे। **ॐ क्लैं कवचाय हुम्**—कहकर भुजाओंका स्पर्श करे। **ॐ क्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्**—कहकर तीनों नेत्रोंका स्पर्श करे। **ॐ क्लः अस्त्राय फट्**—कहकर चारों दिशाओंमें चुटकी बजाकर हथेलीपर दो अँगुलियोंसे आघात करे।

ध्यान

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥ १॥

जिनके मस्तकपर कस्तूरीका तिलक है, वक्षःस्थलमें कौस्तुभमणि है, नासिकाग्रमें अति सुन्दर मोतीका आभूषण (बुलाक) है, करतलमें वंशी है, हाथोंमें कंकण हैं, सम्पूर्ण शरीरमें हरिचन्दनका लेप हुआ है और कण्ठमें मनोहर मोतियोंकी माला है, व्रजांगनाओंसे घिरे हुए ऐसे गोपालचूडामणिकी बलिहारी है॥ १॥

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसङ्घावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे॥ २॥

प्रफुल्ल नीलकमलके समान जिनकी श्याम मनोहर कान्ति है, मुखमण्डलकी चारुता चन्द्रबिम्बको भी विलज्जित करती है, मोरपंखका मुकुट जिन्हें अधिक प्रिय है, जिनका वक्ष स्वर्णमयी श्रीवत्सरेखासे समलंकृत है, जो अत्यन्त तेजस्विनी कौस्तुभमणि धारण करते हैं और रेशमी पीताम्बर पहने हुए हैं, गोपसुन्दरियोंके नयनारविन्द जिनके श्रीअंगोंकी सतत अर्चना करते हैं, गौओं तथा गोपकिशोरोंके संघ जिन्हें घेरकर खड़े हैं तथा जो दिव्य अंगभूषासे विभूषित हो मधुरातिमधुर वेणुवादनमें संलग्न हैं, उन परम सुन्दर गोविन्दका मैं भजन करता हूँ॥ २॥

॥ श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ॐ क्लीं देवः कामदेवः कामबीजशिरोमणिः।
श्रीगोपालो महीपालः सर्ववेदाङ्गपारगः॥ १॥

१. **ॐ क्लीं देवः**—भगवान् श्रीकृष्ण सच्चिदानन्दस्वरूप। २. **कामदेवः**—कामदेवस्वरूप। ३. **कामबीजशिरोमणिः**—कामबीजके अधिष्ठाता। ४. **श्रीगोपालः**—गौ तथा लक्ष्मीके पालक। ५. **महीपालः**—पृथिवीकी रक्षा करनेवाले। ६. **सर्ववेदाङ्गपारगः**—अंगोंसहित सम्पूर्ण वेदोंके ज्ञाता॥ १॥

धरणीपालको धन्यः पुण्डरीकः सनातनः।
गोपतिर्भूपतिः शास्ता प्रहर्ता विश्वतोमुखः॥ २॥

७. **धरणीपालकः**—पृथिवीका पालन करनेवाले। ८. **धन्यः**—सभी प्रकारके ऐश्वर्योंसे परिपूर्ण। ९. **पुण्डरीकः**—कमलके समान शोभावाले। १०. **सनातनः**—शाश्वत। ११. **गोपतिः**—इन्द्रियोंके स्वामी। १२. **भूपतिः**—पृथिवीके स्वामी। १३. **शास्ता**—सभीपर शासन करनेवाले। १४. **प्रहर्ता**—

दुष्टोंका संहार करनेवाले। १५. **विश्वतोमुखः**—सभी ओर मुखवाले॥ २॥

आदिकर्ता महाकर्ता महाकालः प्रतापवान्।
जगज्जीवो जगद्धाता जगद्भर्ता जगद्वसुः॥ ३॥

१६. **आदिकर्ता**—सृष्टिके आदि निर्माता। १७. **महाकर्ता**—जगत्‌के प्रधान स्रष्टा। १८. **महाकालः**—प्रधान संहारकर्ता। १९. **प्रतापवान्**—तेजस्वी। २०. **जगज्जीवः**—विश्वके जीवनस्वरूप। २१. **जगद्धाता**—जगत्‌की रचना करनेवाले। २२. **जगद्भर्ता**—जगत्‌का भरण-पोषण करनेवाले। २३. **जगद्वसुः**—जगत्‌के धनस्वरूप॥ ३॥

मत्स्यो भीमः कुहूभर्ता हर्ता वाराहमूर्तिमान्।
नारायणो हृषीकेशो गोविन्दो गरुडध्वजः॥ ४॥

२४. **मत्स्यः**—मत्स्यका अवतार लेनेवाले। २५. **भीमः**—भयंकर रूप धारण करनेवाले। २६. **कुहूभर्ता**—अमावास्याकी अधिष्ठात्री देवीके स्वामी। २७. **हर्ता**—भक्तोंके दुःखोंको हरण करनेवाले।

२८. **वाराहमूर्तिमान्**—वाराहके रूपमें अवतार लेनेवाले। २९. **नारायणः**—जलमें शयन करनेवाले। ३०. **हृषीकेशः**—इन्द्रियोंके स्वामी। ३१. **गोविन्दः**—गौओंकी रक्षा करनेवाले। ३२. **गरुडध्वजः**—गरुडसे चिह्नित ध्वजावाले ॥ ४ ॥

गोकुलेन्द्रो महाचन्द्रः शर्वरीप्रियकारकः।
कमलामुखलोलाक्षः पुण्डरीकशुभावहः ॥ ५ ॥

३३. **गोकुलेन्द्रः**—व्रजमण्डलके स्वामी। ३४. **महाचन्द्रः**—चन्द्रमाको भी प्रकाशित करनेवाले। ३५. **शर्वरीप्रियकारकः**—गोपांगनाओंको सुख प्रदान करनेवाले। ३६. **कमलामुखलोलाक्षः**—लक्ष्मीके मुखको देखनेके लिये लालायित नेत्रोंवाले। ३७. **पुण्डरीकशुभावहः**—कमलके समान मंगलकारी ॥ ५ ॥

दुर्वासाः कपिलो भौमः सिन्धुसागरसङ्गमः।
गोविन्दो गोपतिर्गोत्रः कालिन्दीप्रेमपूरकः ॥ ६ ॥

३८. **दुर्वासाः**—दुर्वासाके रूपमें अवतीर्ण। ३९. **कपिलः**—सांख्यशास्त्रके प्रवर्तनहेतु कपिल-

मुनिके रूपमें अवतार लेनेवाले। ४०. **भौमः**—प्रकाशमान्। ४१. **सिन्धुसागरसङ्गमः**—सिन्धु नामक नद तथा समुद्रके संगमपर विहार करनेवाले। ४२. **गोविन्दः**—इन्द्रियोंकी रक्षा करनेवाले। ४३. **गोपतिः**—गौओंके स्वामी। ४४. **गोत्रः**—गौओंकी रक्षा करनेवाले। ४५. **कालिन्दीप्रेमपूरकः**—यमुनाको अपने प्रेमवारिसे पूर्ण करनेवाले॥ ६॥

गोपस्वामी गोकुलेन्द्रो गोवर्धनवरप्रदः।
नन्दादिगोकुलत्राता दाता दारिद्र्यभञ्जनः॥ ७॥

४६. **गोपस्वामी**—गोपजनोंके स्वामी। ४७. **गोकुलेन्द्रः**—सभी गोसमुदायके स्वामी। ४८. **गोवर्धनवरप्रदः**—गोवर्धनको वरदान देनेवाले। ४९. **नन्दादिगोकुलत्राता**—नन्द आदि गोपालों तथा गोवंशकी रक्षा करनेवाले। ५०. **दाता**—अनन्त दान देनेवाले। ५१. **दारिद्र्यभञ्जनः**—दरिद्रताका नाश करनेवाले॥ ७॥

सर्वमङ्गलदाता च सर्वकामप्रदायकः।
आदिकर्ता महीभर्ता सर्वसागरसिन्धुजः॥ ८॥

५२. **सर्वमङ्गलदाता**—सभी प्रकारके मंगल प्रदान करनेवाले। ५३. **सर्वकामप्रदायकः**—सभी

मनोरथोंको पूर्ण करनेवाले। ५४. **आदिकर्ता**—आदिसृष्टिके जनक। ५५. **महीभर्ता**—पृथ्वीका भरण-पोषण करनेवाले। ५६. **सर्वसागरसिन्धुजः**—सभी समुद्र तथा नदियोंको उत्पन्न करनेवाले॥ ८॥

गजगामी गजोद्धारी कामी कामकलानिधिः।
कलङ्करहितश्चन्द्रो बिम्बास्यो बिम्बसत्तमः॥ ९॥

५७. **गजगामी**—हाथीके समान गमन करनेवाले। ५८. **गजोद्धारी**—ग्राहसे गजराजका उद्धार करनेवाले। ५९. **कामी**—धर्मानुकूल कामनास्वरूप। ६०. **कामकलानिधिः**—कामकलाके निधान। ६१. **कलङ्करहितः**—कलंकसे सर्वथाविहीन। ६२. **चन्द्रः**—चन्द्रमाकी तरह कान्तिमान्। ६३. **बिम्बास्यः**—बिम्बके समान मुखमण्डलवाले। ६४. **बिम्बसत्तमः**—श्रेष्ठ बिम्बस्वरूप॥ ९॥

मालाकारः कृपाकारः कोकिलास्वरभूषणः।
रामो नीलाम्बरो देवो हली दुर्दममर्दनः॥ १०॥

६५. **मालाकारः**—श्रीराधाके लिये मालानिर्माण करनेवाले। ६६. **कृपाकारः**—कृपाके मूर्तस्वरूप।

६७. **कोकिलास्वरभूषणः**—कोकिलके समान सुमधुर स्वरसे विभूषित। ६८. **रामः**—भक्तोंके हृदयमें रमण करनेवाले। ६९. **नीलाम्बरः**—नीलवस्त्र धारण करनेवाले। ७०. **देवः**—क्रीड़ा (लीला) करनेवाले। ७१. **हली**—बलरामके रूपमें हल धारण करनेवाले। ७२. **दुर्दममर्दनः**—दुर्दम नामक दैत्यका वध करनेवाले॥ १०॥

सहस्राक्षपुरीभेत्ता महामारीविनाशनः।
शिवः शिवतमो भेत्ता बलारातिप्रपूजकः॥ ११॥

७३. **सहस्राक्षपुरीभेत्ता**—कल्पवृक्ष पारिजातके लिये इन्द्रपुरीको विदीर्ण करनेवाले। ७४. **महामारीविनाशनः**—महामारीका नाश करनेवाले। ७५. **शिवः**—कल्याणस्वरूप। ७६. **शिवतमः**—अतिशय कल्याणकारी। ७७. **भेत्ता**—शत्रुओंका विनाश करनेवाले। ७८. **बलारातिप्रपूजकः**—बलवान् शत्रुओंको लीलापूर्वक मान देनेवाले॥ ११॥

कुमारीवरदायी च वरेण्यो मीनकेतनः।
नरो नारायणो धीरो राधापतिरुदारधी:॥ १२॥

७९. **कुमारीवरदायी**—कात्यायनीकी आराधना करनेवाली गोपकुमारियोंको इच्छाके अनुरूप वर देनेवाले। ८०. **वरेण्य:**—सर्वश्रेष्ठ। ८१. **मीनकेतन:**—कामदेवस्वरूप। ८२. **नर:**—नर-अवतार धारण करनेवाले। ८३. **नारायण:**—नारायणस्वरूप। ८४. **धीर:**—अतिशय धैर्यवान्। ८५. **राधापति:**—श्रीराधिकाके स्वामी। ८६. **उदारधी:**—उदार बुद्धिवाले॥ १२॥

श्रीपति: श्रीनिधि: श्रीमान् मापति: प्रतिराजहा।
वृन्दापति: कुलग्रामी धामी ब्रह्म सनातन:॥ १३॥

८७. **श्रीपति:**—लक्ष्मीके स्वामी। ८८. **श्रीनिधि:**—सौन्दर्यके आगार। ८९. **श्रीमान्**—परम

ऐश्वर्यशाली। ९०. **मापतिः**—लक्ष्मीके पति। ९१. **प्रतिराजहा**—प्रतिकूल राजाओंका विनाश करनेवाले। ९२. **वृन्दापतिः**—तुलसीके स्वामी। ९३. **कुलग्रामी**—यदुकुलका संगठन करनेवाले। ९४. **धामी**—गोलोकधाममें निवास करनेवाले। ९५. **ब्रह्म**—अनादि ब्रह्म। ९६. **सनातनः**—शाश्वत॥ १३॥

रेवतीरमणो रामश्चञ्चलश्चारुलोचनः।
रामायणशरीरोऽयं रामी रामः श्रियःपतिः॥ १४॥

९७. **रेवतीरमणः**—बलरामरूपसे रेवतीको आनन्दित करनेवाले। ९८. **रामः**—लोकको आनन्द देनेवाले। ९९. **चञ्चलः**—सर्वत्र गति करनेवाले। १००. **चारुलोचनः**—सुन्दर नेत्रवाले। १०१. **रामायणशरीरः**—रामायणरूप विग्रहवाले। १०२. **रामी**—लीलापूर्वक लोकमें विहार करनेवाले। १०३. **रामः**—त्रेतायुगमें रामावतार धारण करनेवाले। १०४. **श्रियःपतिः**—लक्ष्मीके पति॥ १४॥

शर्वरः शर्वरी शर्वः सर्वत्र शुभदायकः।
राधाराधयितो राधी राधाचित्तप्रमोदकः॥ १५॥

१०५. **शर्वरः**—दिनस्वरूप। १०६. **शर्वरी**—रात्रिस्वरूप। १०७. **शर्वः**—शिवस्वरूप। १०८. **सर्वत्र शुभदायकः**—सर्वत्र कल्याण प्रदान करनेवाले। १०९. **राधाराधयितः**—श्रीराधिकाको प्रसन्न करनेवाले। ११०. **राधी**—भक्तोंको प्रसन्नता देनेवाले। १११. **राधाचित्तप्रमोदकः**—श्रीराधिकाके चित्तको आह्लादित करनेवाले॥ १५॥

राधारतिसुखोपेतो राधामोहनतत्परः।
राधावशीकरो राधाहृदयाम्भोजषट्पदः॥ १६॥

११२. **राधारतिसुखोपेतः**—राधिकाके प्रेममें सुखकी अनुभूति करनेवाले। ११३. **राधामोहनतत्परः**—राधाको मुग्ध करनेमें तत्पर। ११४. **राधावशीकरः**—राधाको अपने वशमें करनेवाले। ११५. **राधाहृदयाम्भोजषट्पदः**—राधिकाके हृदयकमलके भ्रमरस्वरूप॥ १६॥

राधालिङ्गनसम्मोहो राधानर्तनकौतुकः।
राधासञ्जातसम्प्रीती राधाकामफलप्रदः॥ १७॥

१९६. **राधालिङ्गनसम्मोहः**—राधिकाके प्रेमबन्धनमें सम्मोहित। ११७. **राधानर्तनकौतुकः**—राधिकाकी नृत्यक्रीडाके लिये उत्सुक। ११८. **राधासञ्जातसम्प्रीती**—राधिकाके प्रति हृदयमें उत्पन्न प्रेमवाले। ११९. **राधाकामफलप्रदः**—राधिकाकी अभिलाषाको पूर्ण करनेवाले॥ १७॥

वृन्दापतिः कोशनिधिः कोकशोकविनाशकः।
चन्द्रापतिश्चन्द्रपतिश्चण्डकोदण्डभञ्जनः॥ १८॥

१२०. **वृन्दापतिः**—वृन्दाके स्वामी। १२१. **कोशनिधिः**—अनन्त ब्रह्माण्डोंके आश्रय। १२२. **कोकशोकविनाशकः**—चक्रवाक पक्षियोंके शोकशमन करनेवाले सूर्यके समान। १२३. **चन्द्रापतिः**—अमृतमयी चन्द्रिकाके स्वामी चन्द्रस्वरूप। १२४. **चन्द्रपतिः**—चन्द्रके स्वामी। १२५. **चण्डकोदण्डभञ्जनः**—रामरूपमें भगवान् शिवजीके भीषण पिनाकको भंग करनेवाले॥ १८॥

रामो दाशरथी रामो भृगुवंशसमुद्भवः।
आत्मारामो जितक्रोधो मोहो मोहान्धभञ्जनः॥ १९॥

१२६. **रामः**—योगियोंके हृदयमें रमण करनेवाले। १२७. **दाशरथिः रामः**—दशरथनन्दन रामके रूपमें अवतार ग्रहण करनेवाले। १२८. **भृगुवंशसमुद्भवः**—भृगुवंशमें परशुरामरूपसे अवतार लेनेवाले। १२९. **आत्मारामः**—आत्मामें रमण करनेवाले। १३०. **जितक्रोधः**—क्रोधपर विजय प्राप्त करनेवाले। १३१. **मोहः**—साक्षात् मोहस्वरूप। १३२. **मोहान्धभञ्जनः**—मोहरूपी अन्धकारको दूर करनेवाले॥ १९॥

वृषभानुर्भवो भावः काश्यपिः करुणानिधिः।
कोलाहलो हली हाली हेली हलधरप्रियः॥ २०॥

१३३. **वृषभानुः**—पराक्रमी जनोंके बीच सूर्यके समान तेजस्वी। १३४. **भवः**—भक्तोंकी इच्छा पूर्ण करनेके लिये संसारमें अवतार लेनेवाले। १३५. **भावः**—शुभ भावनाओंसे परिपूर्ण।

१३६. **काश्यपि:**—कश्यपजीके पुत्ररूपमें वामनावतार लेनेवाले। १३७. **करुणानिधि:**—दयाके समुद्र। १३८. **कोलाहल:**—नृसिंहावतारमें संसारको कोलाहलमें डालनेवाले। १३९. **हली**—बलभद्रजीके रूपमें हल धारण करनेवाले। १४०. **हाली**—बलरामरूपमें हालाप्रिय*। १४१. **हेली**—क्रीडाप्रिय। १४२. **हलधरप्रिय:**—बलरामजीके अत्यन्त प्रिय॥ २०॥

राधामुखाब्जमार्तण्डो भास्करो रविजो विधु:।
विधिर्विधाता वरुणो वारुणो वारुणीप्रिय:॥ २१॥

१४३. **राधामुखाब्जमार्तण्ड:**—राधाके मुखकमलके लिये सूर्यके समान। १४४. **भास्कर:**—सूर्यके समान विश्वको प्रकाशित करनेवाले। १४५. **रविज:**—रामरूपमें सूर्यवंशमें अवतार लेनेवाले। १४६. **विधु:**—चन्द्रस्वरूप। १४७. **विधि:**—विश्वका विधान करनेवाले। १४८. **विधाता**—संसारकी रचना करनेवाले। १४९. **वरुण:**—जलके अधिष्ठाता वरुणरूप। १५०. **वारुण:**—

* वरुणदेवने बलरामजीके लिये कदम्बके फलका रस निर्मित किया था।

जलरूपसे विद्यमान। १५१. **वारुणीप्रियः**—बलरामजीके रूपमें कदम्ब-रसके प्रेमी॥ २१॥

रोहिणीहृदयानन्दी वसुदेवात्मजो बली।
नीलाम्बरो रौहिणेयो जरासन्धवधोऽमलः॥ २२॥

१५२. **रोहिणीहृदयानन्दी**—रोहिणीजीके हृदयको आनन्दित करनेवाले। १५३. **वसुदेवात्मजः**—वसुदेवजीके पुत्ररूपमें अवतार लेनेवाले। १५४. **बली**—श्रेष्ठ पराक्रमी। १५५. **नीलाम्बरः**—नीले आकाश-जैसी आभावाले। १५६. **रौहिणेयः**—बलरामरूपमें रोहिणीके पुत्र। १५७. **जरासन्धवधः**—भीमके द्वारा जरासन्धका वध करानेवाले। १५८. **अमलः**—निर्मलस्वरूप॥ २२॥

नागो नवाम्भो विरुदो वीरहा वरदो बली।
गोपथो विजयी विद्वान् शिपिविष्टः सनातनः॥ २३॥

१५९. **नागः**—गोवर्धनपर्वतका रूप धारण करनेवाले। १६०. **नवाम्भः**—स्वच्छ जलके समान आभावाले। १६१. **विरुदः**—यशस्वी। १६२. **वीरहा**—वीर शत्रुओंका संहार करनेवाले।

१६३. **वरदः**—भक्तोंको वरदान देनेवाले। १६४. **बली**—सबसे अधिक बलवान्। १६५. **गोपथः**—मन आदि इन्द्रियोंके परम गम्य। १६६. **विजयी**—शत्रुओंपर विजय प्राप्त करनेवाले। १६७. **विद्वान्**—सभी प्रकारके ज्ञानसे परिपूर्ण। १६८. **शिपिविष्टः**—सभी प्राणियोंमें व्याप्त शिवस्वरूप। १६९. **सनातनः**—शाश्वत॥ २३॥

पर्शुरामवचोग्राही वरग्राही शृगालहा।
दमघोषोपदेष्टा च रथग्राही सुदर्शनः॥ २४॥

१७०. **पर्शुरामवचोग्राही**—रामावतारमें परशुरामजीकी प्रार्थना स्वीकार करनेवाले। १७१. **वरग्राही**—उत्तम वस्तुओंको ग्रहण करनेवाले। १७२. **शृगालहा**—मायावियोंके विनाशकर्ता। १७३. **दमघोषोपदेष्टा**—शिशुपालके पिता दमघोषको उपदेश प्रदान करनेवाले। १७४. **रथग्राही**—भीष्मपितामहकी प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके लिये रथचक्रका ग्रहण करनेवाले। १७५. **सुदर्शनः**—देखनेमें अतिसुन्दर॥ २४॥

वीरपत्नीयशस्त्राता जराव्याधिविघातकः।
द्वारकावासतत्त्वज्ञो हुताशनवरप्रदः॥ २५॥

१७६. **वीरपत्नीयशस्त्राता**—अभिमन्युपत्नी उत्तराके गर्भरूप यशके रक्षक। १७७. **जराव्याधिविघातकः**—जरारूप व्याधिको समाप्त करनेवाले। १७८. **द्वारकावासतत्त्वज्ञः**—द्वारकावासके रहस्यके ज्ञाता। १७९. **हुताशनवरप्रदः**—अग्निदेवको वर प्रदान करनेवाले॥ २५॥

यमुनावेगसंहारी नीलाम्बरधरः प्रभुः।
विभुः शरासनो धन्वी गणेशो गणनायकः॥ २६॥

१८०. **यमुनावेगसंहारी**—चरणस्पर्शसे यमुनाके प्रवाहका नियमन करनेवाले। १८१. **नीलाम्बरधरः**—(लीलापूर्वक राधिकाके) नीलवस्त्र धारण करनेवाले। १८२. **प्रभुः**—सम्पूर्ण संसारके अधिपति। १८३. **विभुः**—सर्वव्यापक। १८४. **शरासनः**—धनुष धारण करनेवाले। १८५. **धन्वी**—धनुर्विद्यामें निपुण। १८६. **गणेशः**—गोपगणोंके स्वामी। १८७. **गणनायकः**—यादवगणका नेतृत्व करनेवाले॥ २६॥

लक्ष्मणो लक्षणो लक्ष्यो रक्षोवंशविनाशनः।
वामनो वामनीभूतो वमनो वमनारुहः॥ २७॥

१८८. **लक्ष्मणः**—श्रीवत्सके चिह्नसे शोभित वक्षःस्थलवाले। १८९. **लक्षणः**—शुभ लक्षणोंसे युक्त। १९०. **लक्ष्यः**—प्राणिमात्रके परम ध्येय। १९१. **रक्षोवंशविनाशनः**—राक्षसवंशका विनाश करनेवाले। १९२. **वामनः**—वामनरूपमें अवतार लेनेवाले। १९३. **वामनीभूतः**—देवताओंके कल्याणार्थ वामनका रूप धारण करनेवाले। १९४. **वमनः**—प्रकाशस्वरूप। १९५. **वमनारुहः**—प्रकाशपथ (सत्पथ)-पर आरूढ़॥ २७॥

यशोदानन्दनः कर्ता यमलार्जुनमुक्तिदः।
उलूखली महामानी दामबद्धाह्वयी शमी॥ २८॥

१९६. **यशोदानन्दनः**—यशोदाजीको आनन्द देनेवाले। १९७. **कर्ता**—संसारको बनानेवाले।

१९८. **यमलार्जुनमुक्तिदः**—यमलार्जुनको मुक्ति देनेवाले। १९९. **उलूखली**—यशोदाजीसे ओखलमें बँधनेवाले। २००. **महामानी**—स्वाभिमानियोंमें सर्वश्रेष्ठ। २०१. **दामबद्धाह्वयी**—यशोदाजीद्वारा रस्सीसे बँधनेके कारण 'दामबद्ध' नामवाले। २०२. **शमी**—शान्तिस्वरूप॥ २८॥

भक्तानुकारी भगवान् केशवोऽचलधारकः।
केशिहा मधुहा मोही वृषासुरविघातकः॥ २९॥

२०३. **भक्तानुकारी**—भक्तोंकी इच्छाका मान रखनेवाले। २०४. **भगवान्**—छः ऐश्वर्योंसे सम्पन्न। २०५. **केशवः**—ब्रह्मा, विष्णु और शिवसंज्ञक शक्तियोंसे सम्पन्न। २०६. **अचलधारकः**—गोवर्धन पर्वतको धारण करनेवाले। २०७. **केशिहा**—केशी नामक दैत्यका संहार करनेवाले। २०८. **मधुहा**—मधु नामक दैत्यका वध करनेवाले। २०९. **मोही**—अपनी मायाद्वारा सम्पूर्ण संसारको मोहित करनेवाले। २१०. **वृषासुरविघातकः**—वृषासुरका वध करनेवाले॥ २९॥

अघासुरविनाशी च पूतनामोक्षदायकः।
कुब्जाविनोदी भगवान् कंसमृत्युर्महामखी॥ ३०॥

२११. **अघासुरविनाशी**—अघासुरका विनाश करनेवाले। २१२. **पूतनामोक्षदायकः**—पूतनाको मोक्ष प्रदान करनेवाले। २१३. **कुब्जाविनोदी**—कुब्जाको आनन्द प्रदान करनेवाले। २१४. **भगवान्**—छः ऐश्वर्योंसे सदा परिपूर्ण। २१५. **कंसमृत्युः**—कंसके लिये साक्षात् मृत्युरूप। २१६. **महामखी**—बड़े-बड़े यज्ञोंका अनुष्ठान करनेवाले॥ ३०॥

अश्वमेधो वाजपेयो गोमेधो नरमेधवान्।
कन्दर्पकोटिलावण्यश्चन्द्रकोटिसुशीतलः॥ ३१॥

२१७. **अश्वमेधः**—अश्वमेधयज्ञ करनेवाले। २१८. **वाजपेयः**—वाजपेययज्ञ करनेवाले। २१९. **गोमेधः**—गोमेध यज्ञ करनेवाले। २२०. **नरमेधवान्**—नरमेध यज्ञ करनेवाले। २२१. **कन्दर्पकोटिलावण्यः**—करोड़ों कामदेवोंके समान शोभाशाली। २२२. **चन्द्रकोटिसुशीतलः**—करोड़ों चन्द्रमाओंके समान शीतल॥ ३१॥

रविकोटिप्रतीकाशो वायुकोटिमहाबलः।
ब्रह्मा ब्रह्माण्डकर्ता च कमलावाञ्छितप्रदः॥ ३२॥

२२३. **रविकोटिप्रतीकाशः**—करोड़ों सूर्योंके समान तेजस्वी। २२४. **वायुकोटिमहाबलः**—करोड़ों वायुओंके समान महाबली। २२५. **ब्रह्मा**—सृष्टि करनेवाले। २२६. **ब्रह्माण्डकर्ता**—ब्रह्माण्डोंका निर्माण करनेवाले। २२७. **कमलावाञ्छितप्रदः**—श्रीलक्ष्मीके मनोरथको पूर्ण करनेवाले॥ ३२॥

कमला कमलाक्षश्च कमलामुखलोलुपः।
कमलाव्रतधारी च कमलाभः पुरन्दरः॥ ३३॥

२२८. **कमला**—श्रीलक्ष्मीके रूपसे विराजमान। २२९. **कमलाक्षः**—कमलपुष्पके समान सुन्दर नेत्रवाले। २३०. **कमलामुखलोलुपः**—लक्ष्मीजीके मुखलावण्यमें आसक्त। २३१. **कमलाव्रतधारी**—एकमात्र लक्ष्मीजीसे प्रेम करनेवाले। २३२. **कमलाभः**—नीलकमलके समान कान्तिवाले। २३३. **पुरन्दरः**—शत्रुनगरोंका विध्वंस करनेवाले॥ ३३॥

सौभाग्याधिकचित्तोऽयं महामायी महोत्कटः।
तारकारिः सुरत्राता मारीचक्षोभकारकः॥ ३४॥

२३४. **सौभाग्याधिकचित्तः**—सौभाग्यकी वृद्धिके लिये दत्तचित्त। २३५. **महामायी**—अद्वितीय मायावी। २३६. **महोत्कटः**—दुष्टोंके लिये दुर्धर्ष। २३७. **तारकारिः**—तारक दैत्यके शत्रु। २३८. **सुरत्राता**—देवगणोंको अभयदान देनेवाले। २३९. **मारीचक्षोभकारकः**—रामावतारमें मारीचको विकल करनेवाले॥ ३४॥

विश्वामित्रप्रियो दान्तो रामो राजीवलोचनः।
लङ्काधिपकुलध्वंसी विभीषणवरप्रदः॥ ३५॥

२४०. **विश्वामित्रप्रियः**—महर्षि विश्वामित्रजीके प्रिय। २४१. **दान्तः**—जितेन्द्रिय। २४२. **रामः**—भगवान् श्रीराम। २४३. **राजीवलोचनः**—कमलके समान सुन्दर नेत्रवाले। २४४. **लङ्काधिपकुलध्वंसी**—लंकेश्वर रावणके कुलका विध्वंस करनेवाले। २४५. **विभीषणवरप्रदः**—विभीषणको वर प्रदान करनेवाले॥ ३५॥

सीतानन्दकरो रामो वीरो वारिधिबन्धनः।
खरदूषणसंहारी साकेतपुरवासनः॥ ३६॥

२४६. **सीतानन्दकरः**—सीताजीको आनन्द देनेवाले। २४७. **रामः**—श्रीरामचन्द्र। २४८. **वीरः**—पराक्रमी। २४९. **वारिधिबन्धनः**—समुद्रमें सेतुबन्धका निर्माण करानेवाले। २५०. **खरदूषणसंहारी**—खर-दूषण नामक राक्षसोंका संहार करनेवाले। २५१. **साकेतपुरवासनः**—साकेतपुरमें नित्य निवास करनेवाले॥ ३६॥

चन्द्रावलीपतिः कूलः केशी कंसवधोऽमरः।
माधवो मधुहा माध्वी माध्वीको माधवो मधुः॥ ३७॥

२५२. **चन्द्रावलीपतिः**—चन्द्रावलीके स्वामी। २५३. **कूलः**—कालिन्दीतटपर विहार करनेवाले। २५४. **केशी**—सुन्दर केशवाले। २५५. **कंसवधः**—कंसका संहार करनेवाले। २५६. **अमरः**—मृत्यु आदि छः विकारोंसे रहित। २५७. **माधवः**—लक्ष्मीजीके पति। २५८. **मधुहा**—मधु नामक राक्षसका

संहार करनेवाले। २५९. **माध्वी**—अति मधुर स्वरूपवाले। २६०. **माध्वीकः**—मधुर ध्वनि करनेवाले। २६१. **माधवः**—वसन्त ऋतुस्वरूप। २६२. **मधुः**—मधुर स्वभाववाले॥ ३७॥

मुञ्जाटवीगाहमानो धेनुकारिर्धरात्मजः।
वंशीवटविहारी च गोवर्धनवनाश्रयः॥ ३८॥

२६३. **मुञ्जाटवीगाहमानः**—मूँजके वनोंमें विहरण करनेवाले। २६४. **धेनुकारिः**—धेनुकासुरके शत्रु। २६५. **धरात्मजः**—पृथिवीपुत्र। २६६. **वंशीवटविहारी**—यमुनातटपर वंशीवटमें विहार करनेवाले। २६७. **गोवर्धनवनाश्रयः**—गोवर्धनपर्वतके वनोंमें विश्राम करनेवाले॥ ३८॥

तथा तालवनोद्देशी भाण्डीरवनशङ्खहा।
तृणावर्तकथाकारी वृषभानुसुतापतिः॥ ३९॥

२६८. **तालवनोद्देशी**—तालवनमें भ्रमण करनेवाले। २६९. **भाण्डीरवनशङ्खहा**—भाण्डीरवनमें

शंखासुरका वध करनेवाले। २७०. **तृणावर्तकथाकारी**—तृणावर्त दैत्यका वध करके केवल उसका नाम संसारमें शेष रखनेवाले। २७१. **वृषभानुसुतापतिः**—वृषभानुकी पुत्री राधाके पति॥ ३९॥

राधाप्राणसमो राधावदनाब्जमधुव्रतः।
गोपीरञ्जनदैवज्ञो लीलाकमलपूजितः॥ ४०॥

२७२. **राधाप्राणसमः**—राधिकाजीके प्राणतुल्य। २७३. **राधावदनाब्जमधुव्रतः**—श्रीराधाजीके मुखकमलके भ्रमर। २७४. **गोपीरञ्जनदैवज्ञः**—गोपियोंको प्रसन्न करनेके लिये ज्योतिषीका वेष धारण करनेवाले। २७५. **लीलाकमलपूजितः**—क्रीड़ारत गोपियोंके द्वारा कमलपुष्पोंसे पूजित॥ ४०॥

क्रीडाकमलसन्दोहो गोपिकाप्रीतिरञ्जनः।
रञ्जको रञ्जनो रङ्गो रङ्गी रङ्गमहीरुहः॥ ४१॥

२७६. **क्रीडाकमलसन्दोहः**—क्रीडा-कमलके समूहकी भाँति सुन्दर। २७७. **गोपिकाप्रीतिरञ्जनः**—

प्रेमदानके द्वारा गोपिकाओंको आनन्द देनेवाले। २७८. **रञ्जकः**—सबको आनन्दित करनेवाले। २७९. **रञ्जनः**—आनन्दस्वरूप। २८०. **रङ्गः**—लोकलीलास्वरूप। २८१. **रङ्गी**—लोकलीला करनेवाले। २८२. **रङ्गमहीरुहः**—लीला-विलासके लिये कल्पवृक्षके समान॥ ४१॥

कामः कामारिभक्तोऽयं पुराणपुरुषः कविः।
नारदो देवलो भीमो बालो बालमुखाम्बुजः॥ ४२॥

२८३. **कामः**—कामस्वरूप। २८४. **कामारिभक्तः**—भगवान् शिवके भक्त। २८५. **पुराणपुरुषः**—आदिपुरुष। २८६. **कविः**—ज्ञानस्वरूप। २८७. **नारदः**—नारदरूपसे विश्वमें विचरण करनेवाले। २८८. **देवलः**—देवलऋषिके रूपमें विद्यमान। २८९. **भीमः**—दुष्ट स्वभाववालोंके लिये भयावह। २९०. **बालः**—बालकके समान रूपवाले। २९१. **बालमुखाम्बुजः**—बालकके समान मुखारविन्दवाले॥ ४२॥

अम्बुजो ब्रह्मसाक्षी च योगी दत्तवरो मुनिः।
ऋषभः पर्वतो ग्रामो नदीपवनवल्लभः॥ ४३॥

२९२. **अम्बुजः**—कमलपुष्पके रूपमें प्रतिष्ठित। २९३. **ब्रह्मसाक्षी**—ब्रह्मके साक्षीस्वरूप। २९४. **योगी**—योगपरायण। २९५. **दत्तवरः**—भक्तोंको वर देनेवाले। २९६. **मुनिः**—मननशील मुनिस्वरूप। २९७. **ऋषभः**—ऋषभदेवके रूपमें अवतरित। २९८. **पर्वतः**—अंशरूपसे पर्वतमें भी निवास करनेवाले। २९९. **ग्रामः**—यूथरूपसे संसारमें रहनेवाले। ३००. **नदीपवनवल्लभः**—यमुनानदीके उपवनोंमें प्रीति रखनेवाले॥ ४३॥

पद्मनाभः सुरज्येष्ठो ब्रह्मा रुद्रोऽहिभूषितः।
गणानां त्राणकर्ता च गणेशो ग्रहिलो ग्रही॥ ४४॥

३०१. **पद्मनाभः**—जगत्‌के कारणरूप कमलको अपनी नाभिमें स्थान देनेवाले। ३०२. **सुरज्येष्ठः**—सभी देवताओंमें श्रेष्ठ। ३०३. **ब्रह्मा**—सृष्टि करनेवाले। ३०४. **रुद्रः**—रुद्रस्वरूप। ३०५. **अहिभूषितः**—

सर्पोंके आभूषण धारण करनेवाले। **३०६. गणानां त्राणकर्ता**—देवसेनाकी रक्षा करनेवाले। **३०७. गणेशः**—देवगणोंके स्वामी। **३०८. ग्रहिलः**—शरणागतोंपर अनुग्रह करनेवाले। **३०९. ग्रही**—भक्तोंके द्वारा समर्पित पत्र-पुष्पादिको प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करनेवाले॥ ४४॥

गणाश्रयो गणाध्यक्षः क्रोडीकृतजगत्त्रयः।
यादवेन्द्रो द्वारकेन्द्रो मथुरावल्लभो धुरी॥ ४५॥

३१०. गणाश्रयः—देवताओंको आश्रय प्रदान करनेवाले। **३११. गणाध्यक्षः**—देवगणोंके नाथ। **३१२. क्रोडीकृतजगत्त्रयः**—तीनों लोकोंको अपने अंकमें रखनेवाले। **३१३. यादवेन्द्रः**—यदुवंशियोंके अधिपति। **३१४. द्वारकेन्द्रः**—द्वारकापुरीके अधीश्वर। **३१५. मथुरावल्लभः**—मथुरानगरीके प्रेमभाजन। **३१६. धुरी**—सम्पूर्ण ब्रह्माण्डके आधारस्वरूप॥ ४५॥

भ्रमरः कुन्तली कुन्तीसुतरक्षी महामखी।
यमुनावरदाता च काश्यपस्य वरप्रदः॥ ४६॥

३१७. भ्रमरः—भक्तिरसके आस्वादनमें भ्रमररूप। **३१८. कुन्तली**—सुदीर्घ केशपाशवाले।

३१९. **कुन्तीसुतरक्षी**—कुन्तीके पुत्रोंके रक्षक। ३२०. **महामखी**—राजसूय आदि महान् यज्ञोंको करनेवाले। ३२१. **यमुनावरदाता**—श्रीयमुनाजीको वर प्रदान करनेवाले। ३२२. **काश्यपस्य वरप्रदः**—कश्यपजीके पुत्र देवगणोंको अभय-वर प्रदान करनेवाले॥ ४६॥

शङ्खचूडवधोद्दामो गोपीरक्षणतत्परः।
पाञ्चजन्यकरो रामी त्रिरामी वनजो जयः॥ ४७॥

३२३. **शङ्खचूडवधोद्दामः**—शंखचूडका वध करनेके लिये अत्यन्त व्यग्र। ३२४. **गोपीरक्षणतत्परः**—गोपियोंकी रक्षामें सदा तत्पर। ३२५. **पाञ्चजन्यकरः**—पांचजन्य नामक शंखसे सुशोभित हाथवाले। ३२६. **रामी**—भक्तोंके चित्तमें रमण करनेवाले। ३२७. **त्रिरामी**—श्रीराम, परशुराम और बलराम—इन तीनों नामोंसे प्रख्यात। ३२८. **वनजः**—कमलस्वरूप। ३२९. **जयः**—धर्मविजयस्वरूप॥ ४७॥

फाल्गुनः फाल्गुनसखो विराधवधकारकः।
रुक्मिणीप्राणनाथश्च सत्यभामाप्रियङ्करः॥ ४८॥

३३०. **फाल्गुनः**—अर्जुनके रूपमें प्रादुर्भूत होनेवाले नररूप। ३३१. **फाल्गुनसखः**—अर्जुनके

सखा। ३३२. **विराधवधकारकः**—विराध नामक राक्षसका वध करनेवाले। ३३३. **रुक्मिणीप्राणनाथः**—रुक्मिणीजीके प्राणनाथ। ३३४. **सत्यभामाप्रियङ्करः**—सत्यभामाका प्रिय कार्य करनेवाले॥ ४८॥

कल्पवृक्षो महावृक्षो दानवृक्षो महाफलः।
अंकुशो भूसुरो भामो भामको भ्रामको हरिः॥ ४९॥

३३५. **कल्पवृक्षः**—मनकी इच्छाको पूर्ण करनेवाले कल्पवृक्षस्वरूप। ३३६. **महावृक्षः**—संसाररूपी महावृक्ष। ३३७. **दानवृक्षः**—वृक्षके समान दान देकर संसारके हितमें तत्पर रहनेवाले। ३३८. **महाफलः**—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—पुरुषार्थचतुष्टयरूप महाफलसे युक्त। ३३९. **अंकुशः**—दुष्टोंके लिये अंकुशरूप। ३४०. **भूसुरः**—पृथिवीके देवता ब्राह्मणस्वरूप। ३४१. **भामः**—क्रोधस्वरूप। ३४२. **भामकः**—दूसरोंको भी कुपित करनेवाले। ३४३. **भ्रामकः**—सम्पूर्ण संसारको अपनी मायासे मोहित करनेवाले। ३४४. **हरिः**—भक्तोंके दुःखोंका हरण करनेवाले॥ ४९॥

सरलः शाश्वतो वीरो यदुवंशी शिवात्मकः।
प्रद्युम्नो बलकर्ता च प्रहर्ता दैत्यहा प्रभुः॥ ५०॥

३४५. **सरलः**—स्वभावसे अतिमधुर। ३४६. **शाश्वतः**—सनातन। ३४७. **वीरः**—महापराक्रमशाली। ३४८. **यदुवंशी**—यदुवंशमें आविर्भूत। ३४९. **शिवात्मकः**—कल्याणमय स्वरूपवाले। ३५०. **प्रद्युम्नः**—अत्यन्त कान्तिसे सम्पन्न। ३५१. **बलकर्ता**—निर्बलोंको बल देनेवाले। ३५२. **प्रहर्ता**—दुष्टोंका संहार करनेवाले। ३५३. **दैत्यहा**—दैत्योंका हनन करनेवाले। ३५४. **प्रभुः**—सम्पूर्ण जगत्के स्वामी॥ ५०॥

महाधनो महावीरो वनमालाविभूषणः।
तुलसीदामशोभाढ्यो जालन्धरविनाशनः॥ ५१॥

३५५. **महाधनः**—अनन्त धनराशिसे सम्पन्न। ३५६. **महावीरः**—महापराक्रमशाली। ३५७. **वनमालाविभूषणः**—वनमालाओंका आभूषण धारण करनेवाले। ३५८. **तुलसीदामशोभाढ्यः**—तुलसीकी मालाओंसे सुशोभित। ३५९. **जालन्धरविनाशनः**—जालन्धरका विनाश करनेवाले॥ ५१॥

शूरः सूर्यो मृकण्डश्च भास्करो विश्वपूजितः।
रविस्तमोहा वह्निश्च वाडवो वडवानलः॥ ५२॥

३६०. **शूरः**—शौर्यशाली। ३६१. **सूर्यः**—सूर्यरूपमें विश्वको प्रकाश प्रदान करनेवाले। ३६२. **मृकण्डः**—मार्कण्डेयमुनिस्वरूप। ३६३. **भास्करः**—प्रकाश उत्पन्न करनेवाले। ३६४. **विश्वपूजितः**—सर्वपूजित। ३६५. **रविः**—सूर्यस्वरूप। ३६६. **तमोहा**—अन्धकारको विनष्ट करनेवाले। ३६७. **वह्निः**—अग्निस्वरूप। ३६८. **वाडवः**—ब्राह्मणस्वरूप। ३६९. **वडवानलः**—समुद्रका शोषण करनेवाले अग्निरूप॥ ५२॥

दैत्यदर्पविनाशी च गरुडो गरुडाग्रजः।
गोपीनाथो महीनाथो वृन्दानाथोऽवरोधकः॥ ५३॥

३७०. **दैत्यदर्पविनाशी**—दैत्योंके अभिमानका नाश करनेवाले। ३७१. **गरुडः**—गरुड़रूप। ३७२. **गरुडाग्रजः**—गरुड़के ज्येष्ठ भ्राता सूर्यसारथि अरुणस्वरूप। ३७३. **गोपीनाथः**—गोपियोंके

स्वामी। ३७४. **महीनाथः**—सम्पूर्ण पृथिवीके अधिपति। ३७५. **वृन्दानाथः**—वृन्दाके स्वामी। ३७६. **अवरोधकः**—भक्तोंकी आपत्तियोंका निवारण करनेवाले॥ ५३॥

प्रपञ्ची पञ्चरूपश्च लतागुल्मश्च गोपतिः।
गङ्गा च यमुनारूपो गोदा वेत्रवती तथा॥ ५४॥

३७७. **प्रपञ्ची**—मायाके अधिपति। ३७८. **पञ्चरूपः**—मृत्युस्वरूप। ३७९. **लतागुल्मः**—लता, शाखा आदिमें भी अंशरूपसे विद्यमान। ३८०. **गोपतिः**—गौओंकी रक्षा करनेवाले। ३८१. **गङ्गा**—त्रिभुवनपावनी गंगाजीके रूपमें विद्यमान। ३८२. **यमुनारूपः**—यमुनास्वरूप। ३८३. **गोदा**—गोदावरीस्वरूप। ३८४. **वेत्रवती**—वेत्रवती (वेतवा)-स्वरूप॥ ५४॥

कावेरी नर्मदा तापी गण्डकी सरयूस्तथा।
राजसस्तामसः सत्त्वी सर्वाङ्गी सर्वलोचनः॥ ५५॥

३८५. **कावेरी**—कावेरीरूप। ३८६. **नर्मदा**—नर्मदारूप। ३८७. **तापी**—तापीरूप। ३८८. **गण्डकी**—गण्डकीरूप। ३८९. **सरयूः**—सरयूरूप। ३९०. **राजसः**—रजोगुणमय।

३११. तामसः—तमोगुणसे सम्पन्न। **३१२. सत्त्वी**—सत्त्वगुणयुक्त। **३१३. सर्वाङ्गी**—सम्पूर्ण अंगोंसे सम्पन्न। **३१४. सर्वलोचनः**—सबपर दृष्टि रखनेवाले ॥ ५५ ॥

सुधामयोऽमृतमयो योगिनीवल्लभः शिवः।
बुद्धो बुद्धिमतां श्रेष्ठो विष्णुर्जिष्णुः शचीपतिः ॥ ५६ ॥

३१५. सुधामयः—सुधासे परिपूर्ण। **३१६. अमृतमयः**—अमृतयुक्त। **३१७. योगिनीवल्लभः**—चौंसठ योगिनियोंके प्रेमपात्र। **३१८. शिवः**—कल्याणमय। **३१९. बुद्धः**—ज्ञानस्वरूप। **४००. बुद्धिमतां श्रेष्ठः**—बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ। **४०१. विष्णुः**—सर्वव्यापी। **४०२. जिष्णुः**—सर्वत्र विजय प्राप्त करनेवाले। **४०३. शचीपतिः**—इन्द्राणीके स्वामी ॥ ५६ ॥

वंशी वंशधरो लोको विलोको मोहनाशनः।
रवरावो रवो रावो बालो बालबलाहकः ॥ ५७ ॥

४०४. वंशी—हाथमें वंशी धारण करनेवाले। **४०५. वंशधरः**—वृष्णिवंशके रक्षक।

४०६. लोकः—जगत्स्वरूप। **४०७. विलोकः**—सम्पूर्ण लोकोंमें सदा दृष्टि रखनेवाले। **४०८. मोहनाशनः**—अज्ञानका नाश करनेवाले। **४०९. रवरावः**—नानाविध ध्वनिस्वरूप। **४१०. रवः**—अव्यक्त शब्दवाले। **४११. रावः**—बहुत थोड़े समयमें शत्रुओंको रुला देनेवाले। **४१२. बालः**—बालकके समान सुकोमल स्वभाववाले। **४१३. बालबलाहकः**—नवीन मेघके समान वर्णवाले॥ ५७॥

शिवो रुद्रो नलो नीलो लाङ्गली लाङ्गलाश्रयः।
पारदः पावनो हंसो हंसारूढो जगत्पतिः॥ ५८॥

४१४. शिवः—कल्याणमय विग्रहवाले। **४१५. रुद्रः**—भयकारक स्वरूपवाले। **४१६. नलः**—रामावतारमें सेतुका निर्माण करनेवाले नलस्वरूप। **४१७. नीलः**—रामावतारमें सेतुका निर्माण करनेवाले नीलस्वरूप। **४१८. लाङ्गली**—नल, नील तथा हनुमान् आदिमें अधिक प्रेम होनेके कारण तदात्मभाववाले। **४१९. लाङ्गलाश्रयः**—बलरामजीका अवतार धारणकर हलको ही अपना शस्त्र बनानेवाले। **४२०. पारदः**—प्रसन्न होकर भक्तोंको भवसागरसे पार करनेवाले। **४२१. पावनः**—तीनों

भुवनोंको पवित्र करनेवाले। ४२२. **हंसः**—हंसके समान गतिवाले। ४२३. **हंसारूढः**—ब्रह्मारूपमें हंसपर आरूढ होनेवाले। ४२४. **जगत्पतिः**—जगत्के स्वामी॥ ५८॥

मोहिनीमोहनो मायी महामायो महामखी।
वृषो वृषाकपिः कालः कालीदमनकारकः॥ ५९॥

४२५. **मोहिनीमोहनः**—विश्वमोहिनीको भी अपनी रूपमाधुरीसे मोहित कर देनेवाले। ४२६. **मायी**—मायाकी सृष्टि करनेवाले। ४२७. **महामायः**—महान् मायासे सम्पन्न। ४२८. **महामखी**—बड़े-बड़े यज्ञ करनेवाले। ४२९. **वृषः**—धर्मस्वरूप। ४३०. **वृषाकपिः**—अपने धर्मपर अडिग रहनेवाले। ४३१. **कालः**—कालरूप। ४३२. **कालीदमनकारकः**—कालिय नागका दमन करनेवाले॥ ५९॥

कुब्जाभाग्यप्रदो वीरो रजकक्षयकारकः।
कोमलो वारुणो राजा जलजो जलधारकः॥ ६०॥

४३३. **कुब्जाभाग्यप्रदः**—कुब्जाके भी भाग्यको बदल देनेवाले। ४३४. **वीरः**—शौर्यशाली।

४३५. रजकक्षयकारक:—कंसके धोबीका संहार करनेवाले। **४३६. कोमल:**—स्वभावसे अति कोमल। **४३७. वारुण:**—वरुण देवताके अंशसे विद्यमान। **४३८. राजा**—सर्वोत्तम सौन्दर्यवाले। **४३९. जलज:**—कमलके सदृश अति सुन्दर। **४४०. जलधारक:**—शिवरूपमें भगवती गंगाजीको अपने मस्तकपर धारण करनेवाले॥ ६०॥

हारक: सर्वपापघ्न: परमेष्ठी पितामह:।
खड्गधारी कृपाकारी राधारमणसुन्दर:॥ ६१॥

४४१. हारक:—रुष्ट होनेपर सर्वस्व हर लेनेवाले। **४४२. सर्वपापघ्न:**—सभी प्रकारके पापोंको नष्ट करनेवाले। **४४३. परमेष्ठी**—ब्रह्मारूपसे जगत्‌की सृष्टि करनेवाले। **४४४. पितामह:**—सम्पूर्ण जगत्‌के पितामहस्वरूप। **४४५. खड्गधारी**—हाथमें खड्ग धारण करनेवाले। **४४६. कृपाकारी**—प्राणियोंपर कृपा करनेवाले। **४४७. राधारमणसुन्दर:**—राधाके साथ विहारके लिये सुन्दर रूप धारण करनेवाले॥ ६१॥

द्वादशारण्यसम्भोगी शेषनागफणालयः।
कामः श्यामः सुखः श्रीदः श्रीपतिः श्रीनिधिः कृतिः॥ ६२॥

४४८. **द्वादशारण्यसम्भोगी**—वृन्दावन आदि बारह वनोंमें विहार करनेवाले। ४४९. **शेषनागफणालयः**—शेषनागके फणोंपर अपना निवासस्थान बनानेवाले। ४५०. **कामः**—अतिशय कमनीय। ४५१. **श्यामः**—श्याम वर्णवाले। ४५२. **सुखः**—सुखस्वरूप। ४५३. **श्रीदः**—लक्ष्मी प्रदान करनेवाले। ४५४. **श्रीपतिः**—लक्ष्मीके पति। ४५५. **श्रीनिधिः**—सम्पूर्ण ऐश्वर्यके निधिस्वरूप। ४५६. **कृतिः**—कार्यरूपमें व्यक्त॥ ६२॥

हरिर्हरो नरो नारो नरोत्तम इषुप्रियः।
गोपालीचित्तहर्त्ता च कर्ता संसारतारकः॥ ६३॥

४५७. **हरिः**—दुःखोंको दूर करनेवाले। ४५८. **हरः**—शिवस्वरूप। ४५९. **नरः**—मनुष्यरूपमें अवतार धारण करनेवाले। ४६०. **नारः**—शरणागत मनुष्योंके आश्रय। ४६१. **नरोत्तमः**—मनुष्योंमें

उत्तम। ४६२. **इषुप्रियः**—धनुर्विद्यासे प्रेम रखनेवाले। ४६३. **गोपालीचित्तहर्ता**—गोपिकाओंके चित्तका हरण करनेवाले। ४६४. **कर्ता**—सब कुछ करनेमें समर्थ। ४६५. **संसारतारकः**—अपने भक्तोंको संसारसमुद्रसे पार करनेवाले॥ ६३॥

आदिदेवो महादेवो गौरीगुरुरनाश्रयः।
साधुर्मधुर्विधुर्धाता भ्राता क्रूरपरायणः॥ ६४॥

४६६. **आदिदेवः**—समस्त देवताओंके आदिस्वरूप। ४६७. **महादेवः**—सभी देवताओंमें श्रेष्ठ। ४६८. **गौरीगुरुः**—शिवस्वरूपमें भवानीके पति। ४६९. **अनाश्रयः**—किसीके भी आश्रयकी कामना न रखनेवाले। ४७०. **साधुः**—अपने भक्तोंके हितमें तत्पर रहनेवाले। ४७१. **मधुः**—अतिशय मधुर स्वभाववाले। ४७२. **विधुः**—चन्द्ररूपसे संसारको शीतलता प्रदान करनेवाले। ४७३. **धाता**—सम्पूर्ण विश्वका लालन-पालन करनेवाले। ४७४. **भ्राता**—सबकी रक्षा करनेवाले। ४७५. **क्रूरपरायणः**—दुष्टोंके विनाशमें लगे रहनेवाले॥ ६४॥

रोलम्बी च हयग्रीवो वानरारिर्वनाश्रयः।
वनं वनी वनाध्यक्षो महावन्द्यो महामुनिः॥ ६५॥

४७६. **रोलम्बी**—भक्तिरसका आस्वाद लेनेके लिये भक्तोंके निकट भ्रमरकी तरह भ्रमण करनेवाले। ४७७. **हयग्रीवः**—अपने भक्तोंका संकट दूर करनेके लिये हयग्रीवका अवतार लेनेवाले। ४७८. **वानरारिः**—द्विविद नामक वानरके शत्रुरूप। ४७९. **वनाश्रयः**—वनमें निवास करनेवाले। ४८०. **वनम्**—वनस्वरूप। ४८१. **वनी**—वनोंमें विहार करनेवाले। ४८२. **वनाध्यक्षः**—वनोंके स्वामी। ४८३. **महावन्द्यः**—अतिवन्दनीय। ४८४. **महामुनिः**—मुनियोंमें श्रेष्ठतम॥ ६५॥

स्यमन्तकमणिप्राज्ञो विज्ञो विघ्नविघातकः।
गोवर्धनो वर्धनीयो वर्धनी वर्धनप्रियः॥ ६६॥

४८५. **स्यमन्तकमणिप्राज्ञः**—स्यमन्तकमणिके विषयमें पूर्ण ज्ञानवान्। ४८६. **विज्ञः**—परम ज्ञानी। ४८७. **विघ्नविघातकः**—विघ्नोंके विनाशकर्ता। ४८८. **गोवर्धनः**—गोवंशकी वृद्धि करनेवाले।

४८९. **वर्धनीयः**—बालस्वरूप। ४९०. **वर्धनी**—भक्तोंकी कलुषताका निवारण करनेवाले। ४९१. **वर्धनप्रियः**—भक्तिसम्पदाकी वृद्धिसे प्रीति रखनेवाले॥ ६६॥

वर्धन्यो वर्धनो वर्धी वार्धिन्यः सुमुखप्रियः।
वर्धितो वृद्धको वृद्धो वृन्दारकजनप्रियः॥ ६७॥

४९२. **वर्धन्यः**—उत्तरोत्तर वृद्धिके योग्य। ४९३. **वर्धनः**—वृद्धि करनेवाले। ४९४. **वर्धी**—सभीके लिये उन्नतिमार्गके पथप्रदर्शक। ४९५. **वार्धिन्यः**—सबकी उन्नतिके लिये सदा तत्पर रहनेवाले। ४९६. **सुमुखप्रियः**—सुन्दर मुखके द्वारा सभीको प्रिय लगनेवाले। ४९७. **वर्धितः**—यशोदाजीके द्वारा पालन-पोषण करके वृद्धिको प्राप्त। ४९८. **वृद्धकः**—वृद्धिस्वरूप। ४९९. **वृद्धः**—सबसे वृद्ध। ५००. **वृन्दारकजनप्रियः**—देवताओंके प्रिय॥ ६७॥

गोपालरमणीभर्ता साम्बकुष्ठविनाशनः।
रुक्मिणीहरणः प्रेम प्रेमी चन्द्रावलीपतिः॥ ६८॥

५०१. **गोपालरमणीभर्ता**—गोपालोंकी भार्याओंका भरण-पोषण करनेवाले। ५०२. **साम्बकुष्ठ-**

विनाशनः—साम्बके कुष्ठका नाश करनेवाले। ५०३. **रुक्मिणीहरणः**—रुक्मिणीका हरण करनेवाले। ५०४. **प्रेम**—प्रेमस्वरूप। ५०५. **प्रेमी**—प्रेमपरायण। ५०६. **चन्द्रावलीपतिः**—चन्द्रावलीके स्वामी॥ ६८॥

श्रीकर्ता विश्वभर्ता च नरो नारायणो बली।
गणो गणपतिश्चैव दत्तात्रेयो महामुनिः॥ ६९॥

५०७. **श्रीकर्ता**—सौन्दर्यके दाता। ५०८. **विश्वभर्ता**—सम्पूर्ण विश्वका पालन-पोषण करनेवाले। ५०९. **नरः**—ऋषि नरके रूपमें अवतार लेनेवाले। ५१०. **नारायणः**—ऋषि नारायणके रूपमें अवतार लेनेवाले। ५११. **बली**—महाबलवान्। ५१२. **गणः**—गणरूप। ५१३. **गणपतिः**—गणोंके पति। ५१४. **दत्तात्रेयः**—दत्तात्रेयरूपमें अवतार लेनेवाले। ५१५. **महामुनिः**—मुनियोंमें श्रेष्ठतम॥ ६९॥

व्यासो नारायणो दिव्यो भव्यो भावुकधारकः।
स्वः श्रेयसं शिवं भद्रं भावुकं भविकं शुभम्॥ ७०॥

५१६. **व्यासः**—व्यासका अवतार लेकर वेदोंका विभाग करनेवाले। ५१७. **नारायणः**—साक्षात्

आदिपुरुष। **५१८. दिव्यः**—अलौकिक। **५१९. भव्यः**—अत्यन्त सुन्दर। **५२०. भावुकधारकः**—अपने भक्तोंका सब तरहसे संरक्षण करनेवाले। **५२१. स्वः**—विष्णुरूप। **५२२. श्रेयसम्**—कल्याणरूप। **५२३. शिवम्**—मंगलविग्रहवाले। **५२४. भद्रम्**—कल्याणमय। **५२५. भावुकम्**—भावनामय। **५२६. भविकम्**—स्वयं प्रकट होनेवाले। **५२७. शुभम्**—शुभ स्वरूपवाले॥ ७०॥

शुभात्मकः शुभः शास्ता प्रशास्ता मेघनादहा।
ब्रह्मण्यदेवो दीनानामुद्धारकरणक्षमः॥ ७१॥

५२८. शुभात्मकः—विशुद्ध आत्मावाले। **५२९. शुभः**—शुभस्वरूप। **५३०. शास्ता**—चराचर जगत्के शासक। **५३१. प्रशास्ता**—कठोर शासन करनेवाले। **५३२. मेघनादहा**—श्रीलक्ष्मणजीका स्वरूप धारण करके मेघनादका संहार करनेवाले। **५३३. ब्रह्मण्यदेवः**—ब्रह्मस्वरूप देव। **५३४. दीनानामुद्धारकरणक्षमः**—दीनोंका उद्धार करनेमें समर्थ॥ ७१॥

कृष्णः कमलपत्राक्षः कृष्णः कमललोचनः।
कृष्णः कामी सदाकृष्णः समस्तप्रियकारकः॥ ७२॥

५३५. **कृष्णः**—श्यामवर्णवाले। ५३६. **कमलपत्राक्षः**—कमलदलके समान नेत्रवाले। ५३७. **कृष्णः**—भक्तोंका दुःख दूर करनेवाले। ५३८. **कमललोचनः**—कमलके समान नेत्रवाले। ५३९. **कृष्णः**—कृष्णस्वरूप। ५४०. **कामी**—भक्तोंकी कामनाओंको पूर्ण करनेवाले। ५४१. **सदाकृष्णः**—सदा कृष्णस्वरूपमें विद्यमान। ५४२. **समस्तप्रियकारकः**—सबका प्रिय करनेवाले॥ ७२॥

नन्दो नन्दी महानन्दी मादी मादनकः किली।
मिली हिली गिली गोली गोलो गोलालयो गुली॥ ७३॥

५४३. **नन्दः**—आनन्दस्वरूप। ५४४. **नन्दी**—सभीको आनन्दित करनेवाले। ५४५. **महानन्दी**—परमानन्दमय। ५४६. **मादी**—तमोगुणी पुरुषको मदरूप होकर उन्मत्त करनेवाले। ५४७. **मादनकः**—सांसारिक प्राणियोंको मदमत्त करनेवाले। ५४८. **किली**—अविनाशी परमात्मरूप। ५४९. **मिली**—

छोटे-बड़े सबसे प्रेम करनेवाले। ५५०. **हिली**—गोपियोंके साथ महारास करनेवाले। ५५१. **गिली**—प्रलयकालमें सम्पूर्ण संसारको अपने उदरमें प्रविष्ट कर लेनेवाले। ५५२. **गोली**—ब्रह्माण्डरूपसे विद्यमान। ५५३. **गोल:**—गौओंका पालन करनेवाले। ५५४. **गोलालय:**—गोलोकमें सदा निवास करनेवाले। ५५५. **गुली**—सभी इन्द्रियोंको अपने वशमें करनेवाले॥ ७३॥

गुग्गुली मारकी शाखी वट: पिप्पलक: कृती।
म्लेच्छहा कालहर्ता च यशोदायश एव च॥ ७४॥

५५६. **गुग्गुली**—विप्र तथा धेनुओंकी रक्षामें तत्पर रहनेवाले। ५५७. **मारकी**—पापियोंको मारनेमें दक्ष। ५५८. **शाखी**— स्वयं एक होनेपर भी अपनी अनन्त विभूतियोंके द्वारा संसारका उद्धार करनेवाले। ५५९. **वट:**—वटवृक्षस्वरूप। ५६०. **पिप्पलक:**—पीपलके वृक्षमें निवास करनेवाले। ५६१. **कृती**—सम्पूर्ण कार्योंको करनेमें कुशल। ५६२. **म्लेच्छहा**—धर्ममार्गसे भ्रष्ट जनोंके संहारकर्ता। ५६३. **कालहर्ता**—अप्रकटरूपसे कालपर शासन करनेवाले। ५६४. **यशोदायश:**—यशोदाजीके

यशरूप होकर विश्वमें विख्यात ॥ ७४ ॥

अच्युतः केशवो विष्णुर्हरिः सत्यो जनार्दनः।
हंसो नारायणो लीलो नीलो भक्तिपरायणः॥ ७५ ॥

५६५. **अच्युतः**—अविनाशी। ५६६. **केशवः**—सूर्यकी किरणरूप केशवाले। ५६७. **विष्णुः**—सर्वव्यापी। ५६८. **हरिः**—भक्तोंका दुःख हरनेवाले। ५६९. **सत्यः**—सत्यस्वरूप। ५७०. **जनार्दनः**—प्राणियोंके दुःखका नाश करनेवाले। ५७१. **हंसः**—विवेक-ज्ञानसे सम्पन्न। ५७२. **नारायणः**—जलमें शयन करनेवाले। ५७३. **लीलः**—निर्गुण तथा निराकार होते हुए भी लीलाविग्रह धारण करनेवाले। ५७४. **नीलः**—नीलकमलके समान श्याम वर्णवाले। ५७५. **भक्तिपरायणः**—भक्तिमें अनुरक्त रहनेवाले ॥ ७५ ॥

जानकीवल्लभो रामो विरामो विघ्ननाशनः।
सहस्रांशुर्महाभानुर्वीरबाहुर्महोदधिः ॥ ७६ ॥

५७६. **जानकीवल्लभः**—सीताजीके प्राणप्रिय। ५७७. **रामः**—मुनियोंके हृदयमें रमण करनेवाले।

५७८. विराम:—सांसारिक दु:खोंसे सन्तप्त प्राणियोंके लिये विश्रामस्थल। **५७९. विघ्ननाशन:**—भक्तोंके विघ्नोंके निवारणकर्ता। **५८०. सहस्रांशु:**—सूर्यके रूपमें विश्वको प्रकाश प्रदान करनेवाले। **५८१. महाभानु:**—महासूर्यरूप। **५८२. वीरबाहु:**—अपरिमेय बलसे युक्त भुजाओंवाले। **५८३. महोदधि:**—महासमुद्रस्वरूप॥ ७६॥

समुद्रोऽब्धिरकूपार: पारावार: सरित्पति:।
गोकुलानन्दकारी च प्रतिज्ञापरिपालक:॥ ७७॥

५८४. समुद्र:—समुद्रस्वरूप। **५८५. अब्धि:**—जलस्वरूप। **५८६. अकूपार:**—कूर्मरूप धारण करनेवाले। **५८७. पारावार:**—आदि-अन्तसे विहीन। **५८८. सरित्पति:**—नदियोंके स्वामी। **५८९. गोकुलानन्दकारी**—गोवंशको आनन्दित करनेवाले। **५९०. प्रतिज्ञापरिपालक:**—अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेवाले॥ ७७॥

सदाराम: कृपारामो महारामो धनुर्धर:।
पर्वत: पर्वताकारो गयो गेयो द्विजप्रिय:॥ ७८॥

५९१. **सदाराम:**—सदा सुप्रसन्न रहनेवाले। ५९२. **कृपाराम:**—दीनोंपर कृपा करनेमें आनन्दित होनेवाले। ५९३. **महाराम:**—महानन्दस्वरूप। ५९४. **धनुर्धर:**—धनुष धारण करनेवाले। ५९५. **पर्वत:**—पर्वतस्वरूप। ५९६. **पर्वताकार:**—पर्वतके समान आकारवाले। ५९७. **गय:**—गुणानुवादस्वरूप। ५९८. **गेय:**—गुणगान किये जानेयोग्य। ५९९. **द्विजप्रिय:**—द्विजोंसे प्रीति रखनेवाले॥ ७८॥

कम्बलाश्वतरो रामो रामायणप्रवर्तक:।
द्यौर्दिवो दिवसो दिव्यो भव्यो भाविभयापह:॥ ७९॥

६००. **कम्बलाश्वतर:**—कम्बल तथा अश्वतर नागोंके रूपमें अवतार ग्रहण करनेवाले। ६०१. **राम:**—रामके रूपमें अवतीर्ण। ६०२. **रामायणप्रवर्तक:**—रामायणका प्रवर्तन करनेवाले वाल्मीकिस्वरूप। ६०३. **द्यौ:**—आकाशरूपमें सर्वत्र व्याप्त। ६०४. **दिव:**—स्वर्गरूप। ६०५. **दिवस:**—दिवसस्वरूप।

६०६. **दिव्यः**—अलौकिक। ६०७. **भव्यः**—परम सुन्दर। ६०८. **भाविभयापहः**—भविष्यमें होनेवाले भयोंके विनाशक॥ ७९॥

पार्वतीभाग्यसहितो भ्राता लक्ष्मीविलासवान्।
विलासी साहसी सर्वी गर्वी गर्वितलोचनः॥ ८०॥

६०९. **पार्वतीभाग्यसहितः**—भस्मासुरका विनाश करके पार्वतीके सौभाग्यकी रक्षा करनेवाले। ६१०. **भ्राता**—सभीके बन्धुस्वरूप। ६११. **लक्ष्मीविलासवान्**—लक्ष्मीके साथमें विहार करनेवाले। ६१२. **विलासी**—विलासप्रिय। ६१३. **साहसी**—साहससे सम्पन्न। ६१४. **सर्वी**—सभी रूपोंसे व्याप्त रहनेवाले। ६१५. **गर्वी**—गर्वमय। ६१६. **गर्वितलोचनः**—मदयुक्त नेत्रोंवाले॥ ८०॥

मुरारिर्लोकधर्मज्ञो जीवनो जीवनान्तकः।
यमो यमादिर्यमनो यामी यामविधायकः॥ ८१॥

६१७. **मुरारिः**—मुर नामक दैत्यका संहार करनेवाले। ६१८. **लोकधर्मज्ञः**—सभी लौकिक

धर्मोंके ज्ञाता। ६१९. **जीवनः**—जीवनस्वरूप। ६२०. **जीवनान्तकः**—कालरूपसे जीवनका अन्त करनेवाले। ६२१. **यमः**—यमरूप। ६२२. **यमारिः**—यमराजके भी शत्रु। ६२३. **यमनः**—भक्तोंके दुःखोंका नाश करनेवाले। ६२४. **यामी**—शान्तप्रकृतिवाले। ६२५. **यामविधायकः**—प्रहरका विधान करनेवाले॥ ८१॥

वंसुली पांसुली पांसुः पाण्डुरर्जुनवल्लभः।
ललिताचन्द्रिकामाली माली मालाम्बुजाश्रयः॥ ८२॥

६२६. **वंसुली**—रुक्मिणी आदिके साथ विहार करनेवाले। ६२७. **पांसुली**—अन्य गोपिकाओंके साथमें भी विहार करनेवाले। ६२८. **पांसुः**—व्रजरेणुके रूपमें विद्यमान। ६२९. **पाण्डुः**—पाण्डुस्वरूप। ६३०. **अर्जुनवल्लभः**—अर्जुनके प्रिय सखा। ६३१. **ललिताचन्द्रिकामाली**—उज्ज्वल चन्द्रिकाके समान वैजयन्तीकी माला धारण करनेवाले। ६३२. **माली**—मालासे अतिशय प्रेम करनेवाले। ६३३. **मालाम्बुजाश्रयः**—कमलपुष्पोंकी माला धारण करनेवाले॥ ८२॥

अम्बुजाक्षो महायक्षो दक्षश्चिन्तामणिः प्रभुः।
मणिर्दिनमणिश्चैव केदारो बदराश्रयः॥ ८३॥

६३४. **अम्बुजाक्षः**—कमलके समान नेत्रवाले। ६३५. **महायक्षः**—महान् यक्षस्वरूप। ६३६. **दक्षः**—सभी कार्योंमें कुशल। ६३७. **चिन्तामणिः**—चिन्तामणिस्वरूप। ६३८. **प्रभुः**—चराचर सम्पूर्ण जगत्के स्वामी। ६३९. **मणिः**—सभी प्राणियोंके लिये मणिस्वरूप। ६४०. **दिनमणिः**—सूर्यरूप। ६४१. **केदारः**—केदारस्वरूप। ६४२. **बदराश्रयः**—बदरीनारायणके नामसे विख्यात॥ ८३॥

बदरीवनसम्प्रीतो व्यासः सत्यवतीसुतः।
अमरारिनिहन्ता च सुधासिन्धुर्विधूदयः॥ ८४॥

६४३. **बदरीवनसम्प्रीतः**—बदरीवनसे अत्यन्त प्रेम करनेवाले। ६४४. **व्यासः**—वेदविभागकर्ता। ६४५. **सत्यवतीसुतः**—सत्यवतीके पुत्र। ६४६. **अमरारिनिहन्ता**—देवताओंके शत्रुओंका वध करनेवाले। ६४७. **सुधासिन्धुः**—अमृतके सागर। ६४८. **विधूदयः**—उदीयमान चन्द्रके समान कान्तिवाले॥ ८४॥

चन्द्रो रविः शिवः शूली चक्री चैव गदाधरः।
श्रीकर्ता श्रीपतिः श्रीदः श्रीदेवो देवकीसुतः॥ ८५॥

६४९. **चन्द्रः**—चन्द्रस्वरूप। ६५०. **रविः**—सूर्यस्वरूप। ६५१. **शिवः**—भगवान् शिव। ६५२. **शूली**—त्रिशूल धारण करनेवाले। ६५३. **चक्री**—सुदर्शन चक्र धारण करनेवाले। ६५४. **गदाधरः**—गदा धारण करनेवाले। ६५५. **श्रीकर्ता**—लक्ष्मीकी वृद्धि करनेवाले। ६५६. **श्रीपतिः**—लक्ष्मीपति। ६५७. **श्रीदः**—लक्ष्मी प्रदान करनेवाले। ६५८. **श्रीदेवः**—लक्ष्मीजीके पूजनीय। ६५९. **देवकीसुतः**—देवकीके पुत्ररूपमें अवतीर्ण॥ ८५॥

श्रीपतिः पुण्डरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्पतिः।
वासुदेवोऽप्रमेयात्मा केशवो गरुडध्वजः॥ ८६॥

६६०. **श्रीपतिः**—लक्ष्मीके स्वामी। ६६१. **पुण्डरीकाक्षः**—कमलके समान नेत्रोंवाले। ६६२. **पद्मनाभः**—हृदयकमलके मध्य निवास करनेवाले। ६६३. **जगत्पतिः**—सम्पूर्ण संसारके पति। ६६४. **वासुदेवः**—श्रीवसुदेवजीके पुत्ररूपमें अवतार लेनेवाले। ६६५. **अप्रमेयात्मा**—अमेय आत्मावाले।

६६६. **केशवः**—अपने अंशसे क (ब्रह्मा) तथा ईश (शंकर)-को उत्पन्न करनेवाले। ६६७. **गरुडध्वजः**—गरुडचिह्नसे अंकित रथ-ध्वजावाले॥ ८६॥

नारायणः परं धाम देवदेवो महेश्वरः।
चक्रपाणिः कलापूर्णो वेदवेद्यो दयानिधिः॥ ८७॥

६६८. **नारायणः**—मनुष्यसमूहमें गुप्तरूपसे विद्यमान। ६६९. **परं धाम**—सर्वोत्तम स्थानरूप। ६७०. **देवदेवः**—देवताओंके भी देवता। ६७१. **महेश्वरः**—सर्वश्रेष्ठ ईश्वर। ६७२. **चक्रपाणिः**—हाथमें सुदर्शन चक्र धारण करनेवाले। ६७३. **कलापूर्णः**—अपनी समग्र कलाओंसे पूर्ण। ६७४. **वेदवेद्यः**—वेदोंसे जाननेयोग्य। ६७५. **दयानिधिः**—दयानिधान॥ ८७॥

भगवान्सर्वभूतेशो गोपालः सर्वपालकः।
अनन्तो निर्गुणोऽनन्तो निर्विकल्पो निरञ्जनः॥ ८८॥

६७६. **भगवान्**—सम्पूर्ण ऐश्वर्योंसे सम्पन्न। ६७७. **सर्वभूतेशः**—सभी प्राणियोंके स्वामी। ६७८. **गोपालः**—गौओंका पालन करनेवाले। ६७९. **सर्वपालकः**—सबका पालन करनेवाले।

६८०. **अनन्तः**—अपरिमित। ६८१. **निर्गुणः**—तीनों गुणोंसे परे। ६८२. **अनन्तः**—शेषरूपमें अवतीर्ण। ६८३. **निर्विकल्पः**—सभी प्रकारके संकल्पोंसे रहित। ६८४. **निरञ्जनः**—निर्विकार॥ ८८॥

निराधारो निराकारो निराभासो निराश्रयः।
पुरुषः प्रणवातीतो मुकुन्दः परमेश्वरः॥ ८९॥

६८५. **निराधारः**—किसी भी आधारकी अपेक्षा न रखनेवाले। ६८६. **निराकारः**—आकारविहीन। ६८७. **निराभासः**—आभासरहित। ६८८. **निराश्रयः**—आश्रयबन्धनसे मुक्त। ६८९. **पुरुषः**—अनादि पुरुषस्वरूप। ६९०. **प्रणवातीतः**—ॐकारसे भी परे। ६९१. **मुकुन्दः**—भक्तिरस देनेवाले। ६९२. **परमेश्वरः**—महानतम ईश्वर॥ ८९॥

क्षणावनिः सार्वभौमो वैकुण्ठो भक्तवत्सलः।
विष्णुर्दामोदरः कृष्णो माधवो मथुरापतिः॥ ९०॥

६९३. **क्षणावनिः**—स्वयं पृथिवीरूप। ६९४. **सार्वभौमः**—सम्पूर्ण संसारके एकमात्र शासक।

६९५. **वैकुण्ठः**—परम धामस्वरूप। ६९६. **भक्तवत्सलः**—अपने भक्तोंपर वात्सल्य रखनेवाले। ६९७. **विष्णुः**—सर्वत्र गमन करनेवाले। ६९८. **दामोदरः**—यशोदाजीद्वारा रस्सीसे बँधे हुए उदरप्रदेशवाले। ६९९. **कृष्णः**—श्याम वर्णवाले। ७००. **माधवः**—लक्ष्मीजीके पति। ७०१. **मथुरापतिः**—मथुरापुरीके अधिपति॥ ९०॥

देवकीगर्भसम्भूतो यशोदावत्सलो हरिः।
शिवः सङ्कर्षणः शम्भुर्भूतनाथो दिवस्पतिः॥ ९१॥

७०२. **देवकीगर्भसम्भूतः**—देवकीके गर्भसे प्रादुर्भूत। ७०३. **यशोदावत्सलः**—यशोदाको अतिप्रिय। ७०४. **हरिः**—अपने भक्तोंका दुःख हरण करनेवाले। ७०५. **शिवः**—कल्याणस्वरूप। ७०६. **सङ्कर्षणः**—भक्तोंकी अल्प भक्तिके द्वारा भी अति शीघ्र आकर्षित होनेवाले। ७०७. **शम्भुः**—संसारके कल्याण करनेके निमित्त अवतीर्ण होनेवाले। ७०८. **भूतनाथः**—चराचर प्राणियोंके एकमात्र नाथ। ७०९. **दिवस्पतिः**—स्वर्गलोकके स्वामी॥ ९१॥

अव्ययः सर्वधर्मज्ञो निर्मलो निरुपद्रवः।
निर्वाणनायको नित्यो नीलजीमूतसंनिभः॥ ९२॥

७१०. **अव्ययः**—अविनाशी। ७११. **सर्वधर्मज्ञः**—सभी धर्मोंके ज्ञाता। ७१२. **निर्मलः**—विकाररहित। ७१३. **निरुपद्रवः**—विघ्नोंसे सब तरहसे मुक्त। ७१४. **निर्वाणनायकः**—मोक्षके स्वामी। ७१५. **नित्यः**—सनातन। ७१६. **नीलजीमूतसंनिभः**—नीले मेघके समान आभावाले॥ ९२॥

कलाक्षयश्च सर्वज्ञः कमलारूपतत्परः।
हृषीकेशः पीतवासो वसुदेवप्रियात्मजः॥ ९३॥

७१७. **कलाक्षयः**—स्वेच्छासे अपनी कलाओंको समेट लेनेवाले। ७१८. **सर्वज्ञः**—सब कुछ जाननेवाले। ७१९. **कमलारूपतत्परः**—लक्ष्मीजीके स्वरूपकी उपासनामें तत्पर रहनेवाले। ७२०. **हृषीकेशः**—इन्द्रियोंके स्वामी। ७२१. **पीतवासः**—पीतवर्ण वस्त्रोंको धारण करनेवाले। ७२२. **वसुदेवप्रियात्मजः**—वसुदेवके प्रिय पुत्र॥ ९३॥

नन्दगोपकुमारार्यो नवनीताशनः प्रभुः।
पुराणपुरुषः श्रेष्ठः शङ्खपाणिः सुविक्रमः॥ ९४॥

७२३. **नन्दगोपकुमारार्यः**—नन्दजीके श्रेष्ठ पुत्र। ७२४. **नवनीताशनः**—नवनीतभोजी। ७२५. **प्रभुः**—सम्पूर्ण जगत्के स्वामी। ७२६. **पुराणपुरुषः**—आदिपुरुष। ७२७. **श्रेष्ठः**—सर्वोत्तम। ७२८. **शङ्खपाणिः**—हाथमें शंख धारण करनेवाले। ७२९. **सुविक्रमः**—महान् पराक्रमवाले॥ ९४॥

अनिरुद्धश्चक्ररथः शार्ङ्गपाणिश्चतुर्भुजः।
गदाधरः सुरार्तिघ्नो गोविन्दो नन्दकायुधः॥ ९५॥

७३०. **अनिरुद्धः**—अवरोधरहित गतिवाले। ७३१. **चक्ररथः**—महाभारतके युद्धमें अपने हाथपर रथचक्र उठानेवाले। ७३२. **शार्ङ्गपाणिः**—हाथमें शार्ङ्ग नामक धनुष धारण करनेवाले। ७३३. **चतुर्भुजः**—चार भुजाओंसे सम्पन्न। ७३४. **गदाधरः**—हाथमें कौमोदकी नामक गदा धारण करनेवाले। ७३५. **सुरार्तिघ्नः**—देवगणोंका कष्ट दूर करनेवाले। ७३६. **गोविन्दः**—गौओंके रक्षक।

७३७. **नन्दकायुध:**—नन्दक नामक खड्गको धारण करनेवाले ॥ ९५ ॥

वृन्दावनचर: शौरिर्वेणुवाद्यविशारद:।
तृणावर्तान्तको भीमो साहसो बहुविक्रम: ॥ ९६ ॥

७३८. **वृन्दावनचर:**—वृन्दावनमें विहार करनेवाले। ७३९. **शौरि:**—शूरसेनात्मज वसुदेवजीके पुत्र। ७४०. **वेणुवाद्यविशारद:**—वेणुवादनमें पूर्ण कुशल। ७४१. **तृणावर्तान्तक:**—तृणावर्त नामक दैत्यका विनाश करनेवाले। ७४२. **भीम:**—दुष्टोंके लिये भयंकर। ७४३. **साहस:**—साहससम्पन्न। ७४४. **बहुविक्रम:**—अपरिमित पराक्रमवाले ॥ ९६ ॥

शकटासुरसंहारी बकासुरविनाशन:।
धेनुकासुरसङ्घात: पूतनारिर्नृकेसरी ॥ ९७ ॥

७४५. **शकटासुरसंहारी**—शकटासुरके संहारक। ७४६. **बकासुरविनाशन:**—बकासुरके विनाशक। ७४७. **धेनुकासुरसंघात:**—धेनुकासुरका वध करनेवाले। ७४८. **पूतनारि:**—पूतना नामवाली राक्षसीके

शत्रु। ७४९. **नृकेसरी**—मनुष्योंमें सिंहके समान बलवान्॥ ९७॥

पितामहो गुरुः साक्षी प्रत्यगात्मा सदाशिवः।
अप्रमेयः प्रभुः प्राज्ञोऽप्रतर्क्यः स्वप्नवर्धनः॥ ९८॥

७५०. **पितामहः**—ब्रह्मास्वरूप। ७५१. **गुरुः**—सम्पूर्ण संसारके मार्गदर्शक। ७५२. **साक्षी**—सभी प्राणियोंके शुभाशुभ कर्मोंके द्रष्टा। ७५३. **प्रत्यगात्मा**—जीवोंके अन्तःकरणमें सदा विराजमान रहनेवाले। ७५४. **सदाशिवः**—नित्य मंगलमय। ७५५. **अप्रमेयः**—असीमित। ७५६. **प्रभुः**—सबके स्वामी। ७५७. **प्राज्ञः**—विशिष्ट ज्ञानी। ७५८. **अप्रतर्क्यः**—तर्कोंसे ज्ञात न होनेवाले। ७५९. **स्वप्नवर्धनः**—सृष्टिप्रपंचका विस्तार करनेवाले॥ ९८॥

धन्यो मान्यो भवो भावो धीरः शान्तो जगद्गुरुः।
अन्तर्यामीश्वरो दिव्यो दैवज्ञो देवतागुरुः॥ ९९॥

७६०. **धन्यः**—ऐश्वर्यशाली। ७६१. **मान्यः**—सभीके माननीय। ७६२. **भवः**—संसारस्वरूप।

७६३. **भावः**—भावनामय। ७६४. **धीरः**—धैर्यशाली। ७६५. **शान्तः**—शान्त स्वभाववाले। ७६६. **जगद्गुरुः**—संसारके गुरु। ७६७. **अन्तर्यामी**—सबके हृदयमें निवास करनेवाले। ७६८. **ईश्वरः**—सब कुछ करनेमें समर्थ। ७६९. **दिव्यः**—अलौकिक। ७७०. **दैवज्ञः**—भविष्यज्ञाता। ७७१. **देवतागुरुः**—देवताओंके भी गुरु॥ ९९॥

क्षीराब्धिशयनो धाता लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणाग्रजः।
धात्रीपतिरमेयात्मा चन्द्रशेखरपूजितः॥ १००॥

७७२. **क्षीराब्धिशयनः**—क्षीरसागरमें शयन करनेवाले। ७७३. **धाता**—संसारके रक्षक। ७७४. **लक्ष्मीवान्**—लक्ष्मीपति। ७७५. **लक्ष्मणाग्रजः**—लक्ष्मणजीके ज्येष्ठ भ्राता। ७७६. **धात्रीपतिः**—देवी वसुन्धराके पति। ७७७. **अमेयात्मा**—अपरिमेय आत्मावाले। ७७८. **चन्द्रशेखरपूजितः**—भगवान् शिवके द्वारा पूजित॥ १००॥

लोकसाक्षी जगच्चक्षुः पुण्यचारित्रकीर्तनः।
कोटिमन्मथसौन्दर्यो जगन्मोहनविग्रहः॥ १०१॥

७७९. **लोकसाक्षी**—सम्पूर्ण लोकको देखनेवाले। ७८०. **जगच्चक्षुः**—संसारके नेत्ररूप। ७८१. **पुण्यचारित्रकीर्तनः**—भक्तोंके द्वारा कीर्तित पवित्र चरित्रवाले। ७८२. **कोटिमन्मथसौन्दर्यः**—करोड़ों कामदेवोंके समान सौन्दर्यशाली। ७८३. **जगन्मोहनविग्रहः**—संसारको मोहित करनेमें समर्थ विग्रहवाले॥ १०१॥

मन्दस्मिततमो गोपो गोपिकापरिवेष्टितः।
फुल्लारविन्दनयनश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः॥ १०२॥

७८४. **मन्दस्मिततमः**—मनको हरण करनेवाली मन्द मुसकानसे युक्त। ७८५. **गोपः**—गोवंशके रक्षक। ७८६. **गोपिकापरिवेष्टितः**—गोपिकाओंसे आवृत। ७८७. **फुल्लारविन्दनयनः**—विकसित कमलके समान नेत्रवाले। ७८८. **चाणूरान्ध्रनिषूदनः**—चाणूर नामक अन्ध्र-जातिके वीरका वध करनेवाले॥ १०२॥

इन्दीवरदलश्यामो बर्हिबर्हावतंसकः।
मुरलीनिनदाह्लादो दिव्यमाल्याम्बराश्रयः॥ १०३॥

७८९. **इन्दीवरदलश्यामः**—नीलकमलदलके समान श्याम वर्णवाले। ७९०. **बर्हिबर्हावतंसकः**—मयूरके पंखोंका मुकुट धारण करनेवाले। ७९१. **मुरलीनिनदाह्लादः**—मुरलीकी सुमधुर ध्वनिसे प्रसन्न होनेवाले। ७९२. **दिव्यमाल्याम्बराश्रयः**—दिव्य माला तथा वस्त्रोंको धारण करनेवाले॥ १०३॥

सुकपोलयुगः सुभ्रूयुगलः सुललाटकः।
कम्बुग्रीवो विशालाक्षो लक्ष्मीवान् शुभलक्षणः॥ १०४॥

७९३. **सुकपोलयुगः**—सुन्दर कपोलद्वयवाले। ७९४. **सुभ्रूयुगलः**—दो सुन्दर भौंहोंसे सुशोभित। ७९५. **सुललाटकः**—सुन्दर ललाटसे युक्त। ७९६. **कम्बुग्रीवः**—शंखके समान ग्रीवावाले। ७९७. **विशालाक्षः**—विशाल नेत्रोंवाले। ७९८. **लक्ष्मीवान्**—लक्ष्मीसम्पन्न। ७९९. **शुभलक्षणः**—शुभ लक्षणोंसे युक्त॥ १०४॥

पीनवक्षाश्चतुर्बाहुश्चतुर्मूर्तिस्त्रिविक्रमः ।
कलङ्करहितः शुद्धो दुष्टशत्रुनिबर्हणः ॥ १०५ ॥

८००. **पीनवक्षाः**—स्थूल वक्षःस्थलवाले। ८०१. **चतुर्बाहुः**—चार भुजाओंसे युक्त। ८०२. **चतुर्मूर्तिः**—श्रीकृष्ण, बलराम, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध—इन चार विग्रहोंवाले। ८०३. **त्रिविक्रमः**—वामनावतारमें दैत्यराज बलिसे छल करके तीन पगमें तीनों लोक और उसका शरीर नाप लेनेवाले। ८०४. **कलङ्करहितः**—निष्कलंक। ८०५. **शुद्धः**—पवित्र। ८०६. **दुष्टशत्रुनिबर्हणः**—दुष्ट शत्रुओंका संहार करनेवाले॥ १०५ ॥

किरीटकुण्डलधरः कटकाङ्गदमण्डितः ।
मुद्रिकाभरणोपेतः कटिसूत्रविराजितः ॥ १०६ ॥

८०७. **किरीटकुण्डलधरः**—अपने मस्तकपर मुकुट और कानोंमें कुण्डल धारण करनेवाले। ८०८. **कटकाङ्गदमण्डितः**—कंकण, बिजायठ आदि आभूषणोंसे शोभित। ८०९. **मुद्रिकाभरणोपेतः**—

अँगूठी आदि आभूषणोंसे युक्त। ८१०. **कटिसूत्रविराजित:**—करधनीसे विभूषित॥ १०६॥

मञ्जीररञ्जितपद: सर्वाभरणभूषित:।
विन्यस्तपादयुगलो दिव्यमङ्गलविग्रह:॥ १०७॥

८११. **मञ्जीररञ्जितपद:**—पैजनीसे सुशोभित चरणोंवाले। ८१२. **सर्वाभरणभूषित:**—सभी प्रकारके आभूषणोंसे अलंकृत। ८१३. **विन्यस्तपादयुगल:**—अपने दोनों चरणोंको सुव्यवस्थित रूपसे रखनेवाले। ८१४. **दिव्यमङ्गलविग्रह:**—कान्तिमान् तथा मंगलमय विग्रहवाले॥ १०७॥

गोपिकानयनानन्द: पूर्णचन्द्रनिभानन:।
समस्तजगदानन्द: सुन्दरो लोकनन्दन:॥ १०८॥

८१५. **गोपिकानयनानन्द:**—गोपिकाओंके नेत्रोंको आनन्द देनेवाले। ८१६. **पूर्णचन्द्रनिभानन:**—पूर्णचन्द्रके समान मुखमण्डलवाले। ८१७. **समस्तजगदानन्द:**—सम्पूर्ण जगत्‌को आनन्दित करनेवाले। ८१८. **सुन्दर:**—सौन्दर्यमय। ८१९. **लोकनन्दन:**—लोकोंके आनन्ददाता॥ १०८॥

यमुनातीरसञ्चारी राधामन्मथवैभवः।
गोपनारीप्रियो दान्तो गोपीवस्त्रापहारकः॥ १०९॥

८२०. **यमुनातीरसञ्चारी**—यमुनाके तटपर विचरण करनेवाले। ८२१. **राधामन्मथवैभवः**—अपनी प्रियतमा राधाके वैभवस्वरूप। ८२२. **गोपनारीप्रियः**—गोपांगनाओंके प्रिय। ८२३. **दान्तः**—उदार। ८२४. **गोपीवस्त्रापहारकः**—गोपिकाओंके वस्त्रका हरण करनेवाले॥ १०९॥

शृङ्गारमूर्तिः श्रीधामा तारको मूलकारणम्।
सृष्टिसंरक्षणोपायः क्रूरासुरविभञ्जनः॥ ११०॥

८२५. **शृङ्गारमूर्तिः**—शृंगारविग्रह। ८२६. **श्रीधामा**—शोभाके धाम। ८२७. **तारकः**—दीनोंका उद्धार करनेवाले। ८२८. **मूलकारणम्**—सृष्टिके मूल कारण। ८२९. **सृष्टिसंरक्षणोपायः**—सृष्टिकी रक्षाके लिये एकमात्र उपायस्वरूप। ८३०. **क्रूरासुरविभञ्जनः**—क्रूर नामक असुरका नाश करनेवाले॥ ११०॥

नरकासुरहारी च मुरारिर्वैरिमर्दनः।
आदितेयप्रियो दैत्यभीकरश्चेन्दुशेखरः॥ १११॥

८३१. **नरकासुरहारी**—नरकासुरका संहार करनेवाले। ८३२. **मुरारिः**—मुर नामक असुरके शत्रु। ८३३. **वैरिमर्दनः**—शत्रुओंका दमन करनेवाले। ८३४. **आदितेयप्रियः**—देवगणोंके प्रिय। ८३५. **दैत्यभीकरः**—दैत्योंको भय देनेवाले। ८३६. **इन्दुशेखरः**—शिवरूपमें भालपर चन्द्रमाको धारण करनेवाले॥ १११॥

जरासन्धकुलध्वंसी कंसारातिः सुविक्रमः।
पुण्यश्लोकः कीर्तनीयो यादवेन्द्रो जगन्नुतः॥ ११२॥

८३७. **जरासन्धकुलध्वंसी**—जरासन्धके वंशका विनाश करनेवाले। ८३८. **कंसारातिः**—कंसके शत्रु। ८३९. **सुविक्रमः**—महान् पराक्रमवाले। ८४०. **पुण्यश्लोकः**—पवित्र कीर्तिवाले। ८४१. **कीर्तनीयः**—प्रशंसनीय। ८४२. **यादवेन्द्रः**—यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ। ८४३. **जगन्नुतः**—सम्पूर्ण जगत्से नमस्कृत॥ ११२॥

रुक्मिणीरमणः सत्यभामाजाम्बवतीप्रियः।
मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासितः ॥ ११३ ॥

८४४. **रुक्मिणीरमणः**—रुक्मिणीके पति। ८४५. **सत्यभामाजाम्बवतीप्रियः**—सत्यभामा तथा जाम्बवतीके प्रियतम। ८४६. **मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासितः**—मित्रविन्दा, नाग्नजिती तथा लक्ष्मणाके द्वारा सेवित ॥ ११३ ॥

सुधाकरकुले जातोऽनन्तप्रबलविक्रमः।
सर्वसौभाग्यसम्पन्नो द्वारकायामुपस्थितः ॥ ११४ ॥

८४७. **सुधाकरकुले जातः**—चन्द्रवंशमें आविर्भूत। ८४८. **अनन्तप्रबलविक्रमः**—अपरिमित बल तथा पराक्रमवाले। ८४९. **सर्वसौभाग्यसम्पन्नः**—सभी ऐश्वर्योंसे परिपूर्ण। ८५०. **द्वारकायामुपस्थितः**—द्वारकापुरीमें निवास करनेवाले ॥ ११४ ॥

भद्रासूर्यसुतानाथो लीलामानुषविग्रहः।
सहस्रषोडशस्त्रीशो भोगमोक्षैककदायकः॥ ११५॥

८५१. **भद्रासूर्यसुतानाथः**—भद्रा तथा सूर्यपुत्री यमुनाके पति। ८५२. **लीलामानुषविग्रहः**—लीला करनेके लिये मानवदेह धारण करनेवाले। ८५३. **सहस्रषोडशस्त्रीशः**—सोलह हजार स्त्रियोंके पति। ८५४. **भोगमोक्षैककदायकः**—भोग तथा मोक्षके एकमात्र दाता॥ ११५॥

वेदान्तवेद्यः संवेद्यो वैद्यो ब्रह्माण्डनायकः।
गोवर्धनधरो नाथः सर्वजीवदयापरः॥ ११६॥

८५५. **वेदान्तवेद्यः**—वेदान्तके द्वारा जाने जा सकनेवाले। ८५६. **संवेद्यः**—विशुद्ध ज्ञानके द्वारा ज्ञेय। ८५७. **वैद्यः**—सभी विद्याओंके ज्ञाता। ८५८. **ब्रह्माण्डनायकः**—सम्पूर्ण ब्रह्माण्डके नायक। ८५९. **गोवर्धनधरः**—गोवर्धनपर्वतको धारण करनेवाले। ८६०. **नाथः**—समस्त प्राणियोंके प्रभु। ८६१. **सर्वजीवदयापरः**— सभी जीवोंपर दया करनेके लिये तत्पर॥ ११६॥

मूर्तिमान्सर्वभूतात्मा आर्तत्राणपरायणः।
सर्वज्ञः सर्वसुलभः सर्वशास्त्रविशारदः॥ ११७॥

८६२. **मूर्तिमान्**—विग्रहमय। ८६३. **सर्वभूतात्मा**—सभी प्राणियोंमें आत्मारूपसे व्याप्त। ८६४. **आर्तत्राणपरायणः**—दुःखियोंकी रक्षामें सदा तत्पर। ८६५. **सर्वज्ञः**—सब कुछ जाननेवाले। ८६६. **सर्वसुलभः**—सभीके लिये सहजरूपसे सुलभ। ८६७. **सर्वशास्त्रविशारदः**—सभी शास्त्रोंके महान् ज्ञाता॥ ११७॥

षड्गुणैश्वर्यसम्पन्नः पूर्णकामो धुरन्धरः।
महानुभावः कैवल्यदायको लोकनायकः॥ ११८॥

८६८. **षड्गुणैश्वर्यसम्पन्नः**—छः गुणरूप ऐश्वर्योंसे परिपूर्ण। ८६९. **पूर्णकामः**—पूर्ण मनोरथवाले। ८७०. **धुरन्धरः**—पृथिवीका भार धारण करनेवाले। ८७१. **महानुभावः**—महान् ऐश्वर्यवाले। ८७२. **कैवल्यदायकः**—मोक्षदाता। ८७३. **लोकनायकः**—समस्त लोकोंके स्वामी॥ ११८॥

आदिमध्यान्तरहितः शुद्धसात्त्विकविग्रहः।
असमानः समस्तात्मा शरणागतवत्सलः॥ ११९॥

८७४. **आदिमध्यान्तरहितः**—आदि, मध्य तथा अन्तसे रहित। ८७५. **शुद्धसात्त्विकविग्रहः**—शुद्ध एवं सात्त्विक विग्रहवाले। ८७६. **असमानः**—असाधारण। ८७७. **समस्तात्मा**—अखिलात्मा। ८७८. **शरणागतवत्सलः**—शरणागतसे अतिशय स्नेह करनेवाले॥ ११९॥

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणं सर्वकारणम्।
गम्भीरः सर्वभावज्ञः सच्चिदानन्दविग्रहः॥ १२०॥

८७९. **उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणम्**—संसारके सृजन, पालन तथा संहारके कारण। ८८०. **सर्वकारणम्**—सबके आदिकारण । ८८१. **गम्भीरः**—गम्भीर स्वभाववाले। ८८२. **सर्वभावज्ञः**—सभीके भावोंको जाननेवाले। ८८३. **सच्चिदानन्दविग्रहः**—सत्-चित् तथा आनन्दस्वरूप॥ १२०॥

विष्वक्सेनः सत्यसंधः सत्यवान्सत्यविक्रमः।
सत्यव्रतः सत्यसंज्ञः सर्वधर्मपरायणः॥ १२१॥

८८४. **विष्वक्सेनः**—युद्धके लिये उद्योगमात्रसे शत्रुसेनाको चारों ओर तितर-बितर कर देनेवाले। ८८५. **सत्यसन्धः**—दृढ़प्रतिज्ञ। ८८६. **सत्यवान्**—सत्यवादी। ८८७. **सत्यविक्रमः**—सत्यरूप पराक्रमवाले। ८८८. **सत्यव्रतः**—सत्यव्रती। ८८९. **सत्यसंज्ञः**—सत्य नामवाले। ८९०. **सर्वधर्मपरायणः**—सभी धर्मोंमें निरत॥ १२१॥

आपन्नार्तिप्रशमनो द्रौपदीमानरक्षकः।
कन्दर्पजनकः प्राज्ञो जगन्नाटकवैभवः॥ १२२॥

८९१. **आपन्नार्तिप्रशमनः**—विपत्तिमें पड़े प्राणियोंके कष्टका निवारण करनेवाले। ८९२. **द्रौपदीमानरक्षकः**—द्रौपदीकी मर्यादाकी रक्षा करनेवाले। ८९३. **कन्दर्पजनकः**—कामदेवके जन्मदाता। ८९४. **प्राज्ञः**—विशिष्ट ज्ञानवान्। ८९५. **जगन्नाटकवैभवः**—संसाररूप नाटकके वैभव॥ १२२॥

भक्तिवश्यो गुणातीतः सर्वैश्वर्यप्रदायकः।
दमघोषसुतद्वेषी बाणबाहुविखण्डनः॥ १२३॥

८९६. **भक्तिवश्यः**—भक्तिसे वशमें होनेवाले। ८९७. **गुणातीतः**—गुणोंसे परे। ८९८. **सर्वैश्वर्यप्रदायकः**—सभी ऐश्वर्योंके दाता। ८९९. **दमघोषसुतद्वेषी**—दमघोषके पुत्र शिशुपालके शत्रु। ९००. **बाणबाहुविखण्डनः**—बाणासुरकी भुजाओंको काट डालनेवाले॥ १२३॥

भीष्मभक्तिप्रदो दिव्यः कौरवान्वयनाशनः।
कौन्तेयप्रियबन्धुश्च पार्थस्यन्दनसारथिः॥ १२४॥

९०१. **भीष्मभक्तिप्रदः**—पितामह भीष्मको भक्ति प्रदान करनेवाले। ९०२. **दिव्यः**—देवस्वरूप। ९०३. **कौरवान्वयनाशनः**—कौरववंशका नाश करनेवाले। ९०४. **कौन्तेयप्रियबन्धुः**—अर्जुनके प्रिय सखा। ९०५. **पार्थस्यन्दनसारथिः**—अर्जुनका रथ हाँकनेवाले॥ १२४॥

नारसिंहो महावीरः स्तम्भजातो महाबलः।
प्रह्लादवरदः सत्यो देवपूज्योऽभयङ्करः॥ १२५॥

१०६. **नारसिंहः**—भक्तरक्षार्थ नृसिंहका रूप धारण करनेवाले। १०७. **महावीरः**—महापराक्रमी। १०८. **स्तम्भजातः**—हिरण्यकशिपुके वधके लिये खम्भेसे प्रकट होनेवाले। १०९. **महाबलः**—महान् बलशाली। ११०. **प्रह्लादवरदः**—प्रह्लादको वर देनेवाले। १११. **सत्यः**—सत्यस्वरूप। ११२. **देवपूज्यः**—देवताओंके पूजनीय। ११३. **अभयङ्करः**—भक्तोंको अभय प्रदान करनेवाले॥ १२५॥

उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिबन्धनः।
गजेन्द्रवरदः स्वामी सर्वदेवनमस्कृतः॥ १२६॥

११४. **उपेन्द्रः**—देवराज इन्द्रके अनुज। ११५. **इन्द्रावरजः**—इन्द्रके अनुजरूपमें आविर्भूत। ११६. **वामनः**—बलिको छलनेहेतु वामनरूपमें अवतीर्ण। ११७. **बलिबन्धनः**—दैत्यराज बलिको बाँधनेवाले। ११८. **गजेन्द्रवरदः**—गजेन्द्रको वरदान देनेवाले। ११९. **स्वामी**—तीनों भुवनोंके पति।

१२०. **सर्वदेवनमस्कृत:**—सभी देवताओंसे नमस्कृत॥ १२६॥

शेषपर्यङ्कशयनो वैनतेयरथो जयी।
अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्न: पूर्णमानस:॥ १२७॥

१२१. **शेषपर्यङ्कशयन:**—शेषशय्यापर शयन करनेवाले। १२२. **वैनतेयरथ:**—गरुडवाहन। १२३. **जयी**—सर्वत्र विजय प्राप्त करनेवाले। १२४. **अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्न:**—अखण्डित बल तथा ऐश्वर्यसे सम्पन्न। १२५. **पूर्णमानस:**—पूर्ण कामनाओंवाले॥ १२७॥

योगेश्वरेश्वर: साक्षी क्षेत्रज्ञो ज्ञानदायक:।
योगिहृत्पङ्कजावासो योगमायासमन्वित:॥ १२८॥

१२६. **योगेश्वरेश्वर:**—योगेश्वरोंके भी ईश्वर। १२७. **साक्षी**—सम्पूर्ण संसारके द्रष्टा। १२८. **क्षेत्रज्ञ:**—समस्त प्रकृतिरूप शरीरको जाननेवाले। १२९. **ज्ञानदायक:**—ज्ञान देनेवाले। १३०. **योगिहृत्पङ्कजावास:**—योगियोंके हृदयकमलमें निवास करनेवाले। १३१. **योगमायासमन्वित:**—योगमायासे युक्त॥ १२८॥

नादबिन्दुकलातीतश्चतुर्वर्गफलप्रदः ।
सुषुम्णामार्गसञ्चारी देहस्यान्तरसंस्थितः ॥ १२९ ॥

१३२. **नादबिन्दुकलातीतः**—नाद-बिन्दु तथा कलाओंसे भी परे। १३३. **चतुर्वर्गफलप्रदः**—धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष—इन चारों पुरुषार्थोंके दाता। १३४. **सुषुम्णामार्गसञ्चारी**—सुषुम्ना नाड़ीके मार्गमें विचरण करनेवाले। १३५. **देहस्यान्तरसंस्थितः**—प्रत्येक जीवके शरीरमें विद्यमान॥ १२९ ॥

देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी चेतःप्रसादकः ।
सूक्ष्मः सर्वगतो देही ज्ञानदर्पणगोचरः ॥ १३० ॥

१३६. **देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी**—देह, इन्द्रिय, मन तथा प्राणके साक्षी। १३७. **चेतःप्रसादकः**—चित्तको प्रसन्न करनेवाले। १३८. **सूक्ष्मः**—अणुसे भी अणु। १३९. **सर्वगतः**—सर्वत्र व्याप्त रहनेवाले। १४०. **देही**—शरीर धारण करनेवाले। १४१. **ज्ञानदर्पणगोचरः**—ज्ञानरूपी दर्पणके द्वारा प्रत्यक्ष होनेवाले॥ १३० ॥

तत्त्वत्रयात्मकोऽव्यक्तः कुण्डलीसमुपाश्रितः।
ब्रह्मण्यः सर्वधर्मज्ञः शान्तो दान्तो गतक्लमः॥ १३१ ॥

१४२. **तत्त्वत्रयात्मकः**—सत्त्व आदि त्रिगुणात्मक स्वरूपवाले। १४३. **अव्यक्तः**—नाम एवं रूपसे परे। १४४. **कुण्डलीसमुपाश्रितः**—मूलाधारस्थित कुण्डलिनीमें निवास करनेवाले। १४५. **ब्रह्मण्यः**—तप, वेद, ब्राह्मण तथा ज्ञानके रक्षक। १४६. **सर्वधर्मज्ञः**—सभी धर्मोंके ज्ञाता। १४७. **शान्तः**—शान्तिस्वरूप। १४८. **दान्तः**—जितेन्द्रिय। १४९. **गतक्लमः**—अवसादरहित॥ १३१॥

श्रीनिवासः सदानन्दो विश्वमूर्तिर्महाप्रभुः।
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ १३२ ॥

१५०. **श्रीनिवासः**—लक्ष्मीके निवासस्थान। १५१. **सदानन्दः**—सदा आनन्दमय। १५२. **विश्वमूर्तिः**—विश्वरूप विग्रहवाले। १५३. **महाप्रभुः**—सबके स्वामी। १५४. **सहस्रशीर्षा**—हजार सिरवाले। १५५. **पुरुषः**—पुर अर्थात् शरीरमें शयन करनेवाले। १५६. **सहस्राक्षः**— हजार नेत्रवाले। १५७. **सहस्रपात्**—हजार पादवाले॥ १३२॥

समस्तभुवनाधारः समस्तप्राणरक्षकः।
समस्तसर्वभावज्ञो गोपिकाप्राणवल्लभः॥ १३३ ॥

९५८. समस्तभुवनाधारः—समस्त लोकोंके आधारस्वरूप। **९५९. समस्तप्राणरक्षकः**—समग्र जीवोंके प्राणोंके रक्षक। **९६०. समस्तसर्वभावज्ञः**—समस्त प्राणियोंके सभी मनोभावोंको जाननेवाले। **९६१. गोपिकाप्राणवल्लभः**—गोपिकाओंके प्राणोंके प्रिय॥ १३३ ॥

नित्योत्सवो नित्यसौख्यो नित्यश्रीर्नित्यमङ्गलः।
व्यूहार्चितो जगन्नाथः श्रीवैकुण्ठपुराधिपः॥ १३४ ॥

९६२. नित्योत्सवः—नित्य उत्सवमय। **९६३. नित्यसौख्यः**—नित्य सुखस्वरूप। **९६४. नित्यश्रीः**—नित्य शोभामय। **९६५. नित्यमङ्गलः**—नित्य मंगलमय। **९६६. व्यूहार्चितः**—मूर्तिमें पूजित। **९६७. जगन्नाथः**—जगत्के स्वामी। **९६८. श्रीवैकुण्ठपुराधिपः**—वैकुण्ठपुरीके अधिपति॥ १३४ ॥

पूर्णानन्दघनीभूतो गोपवेषधरो हरिः।
कलापकुसुमश्यामः कोमलः शान्तविग्रहः॥ १३५॥

१६९. **पूर्णानन्दघनीभूतः**—पूर्ण आनन्दके घनस्वरूप। १७०. **गोपवेषधरः**—गोपका वेष धारण करनेवाले। १७१. **हरिः**—पाप-तापोंका हरण करनेवाले। १७२. **कलापकुसुमश्यामः**—मयूरपंख तथा अलसीके पुष्पके तुल्य श्याम वर्णवाले। १७३. **कोमलः**—कोमल प्रकृतिवाले। १७४. **शान्तविग्रहः**—शान्तिमय विग्रहवाले॥ १३५॥

गोपाङ्गनावृतोऽनन्तो वृन्दावनसमाश्रयः।
वेणुवादरतः श्रेष्ठो देवानां हितकारकः॥ १३६॥

१७५. **गोपाङ्गनावृतः**—गोपांगनाओंसे आवृत। १७६. **अनन्तः**—अपरिमित। १७७. **वृन्दावन-समाश्रयः**—वृन्दावनमें निवास करनेवाले। १७८. **वेणुवादरतः**—वंशी बजानेमें तत्पर। १७९. **श्रेष्ठः**—महान्। १८०. **देवानां हितकारकः**—देवताओंका हित करनेवाले॥ १३६॥

बालक्रीडासमासक्तो नवनीतस्य तस्करः।
गोपालकामिनीजारश्चोरजारशिखामणिः ॥ १३७ ॥

९८१. **बालक्रीडासमासक्तः**—गोपबालकोंके साथ क्रीड़ामें आसक्त रहनेवाले। ९८२. **नवनीतस्य तस्करः**—माखनकी चोरी करनेवाले। ९८३. **गोपालकामिनीजारः**—गोपांगनाओंके साथ प्रेमभाव रखनेवाले। ९८४. **चोरजारशिखामणिः***—चोरी और प्रेम करनेवालोंमें शिरोमणि ॥ १३७ ॥

परं ज्योतिः पराकाशः परावासः परिस्फुटः।
अष्टादशाक्षरो मन्त्रो व्यापको लोकपावनः॥ १३८ ॥

९८५. **परं ज्योतिः**—परम कान्तिवाले। ९८६. **पराकाशः**—आकाशसे भी परे। ९८७. **परा-**

* 'चोरजारशिखामणिः' का अर्थ है कि भगवान्‌के समान चोर और जार दूसरा कोई है ही नहीं, हो सकता ही नहीं। दूसरे चोर और जार तो केवल अपना ही सुख चाहते हैं, पर भगवान् केवल दूसरेके सुखके लिये चोर और जारकी लीला करते हैं। उनकी ये दोनों ही लीलाएँ दिव्य, विलक्षण, अलौकिक हैं—'जन्म कर्म च मे दिव्यम्' (गीता ४।९)। संसारी चोर तो केवल वस्तुओंकी ही चोरी करते हैं, पर भगवान् वस्तुओंके साथ-साथ उन वस्तुओंके राग, आसक्ति, प्रियता आदिको भी चुरा लेते हैं। भगवान्‌ने गोपियोंके मक्खनके साथ-साथ उनके रागरूप बन्धनको भी खा लिया था। वे जार बनते हैं तो सुखके भोक्ताके साथ-साथ सुखासक्ति, सुखबुद्धिका भी हरण कर लेते हैं, जिससे सम्बन्धजन्य आकर्षण (काम) न रहकर केवल भगवान्‌का आकर्षण (विशुद्ध प्रेम) रह जाता है, अन्यकी सत्ता न रहकर केवल भगवान्‌की सत्ता रह जाती है। तात्पर्य है कि भगवान् अपने भक्तोंमें किसीको चोर और जार रहने ही नहीं देते, उनके चोर-जारपनेको ही हर लेते हैं। 'कनक' (धन) और 'कामिनी' (स्त्री)-की आसक्तिसे ही मनुष्य 'चोर' और 'जार' होता है। अतः कनक-कामिनीकी आसक्तिका सर्वथा अभाव करनेवाले होनेसे भगवान् चोर और जारके भी शिखामणि हैं।

वासः—सर्वोत्तम निवासस्थानवाले। १८८. **परिस्फुटः**—सर्वत्र दृश्यमान। १८९. **अष्टादशाक्षरो मन्त्रः**—अठारह अक्षरोंवाले मन्त्रस्वरूप। १९०. **व्यापकः**—सर्वत्र विद्यमान। १९१. **लोकपावनः**—समग्र लोकोंको पवित्र करनेवाले॥ १३८॥

सप्तकोटिमहामन्त्रशेखरो देवशेखरः।
विज्ञानज्ञानसन्धानस्तेजोराशिर्जगत्पतिः ॥ १३९॥

१९२. **सप्तकोटिमहामन्त्रशेखरः**—सात करोड़ महामन्त्रोंमें सर्वश्रेष्ठ। १९३. **देवशेखरः**—देवताओंमें श्रेष्ठ। १९४. **विज्ञानज्ञानसन्धानः**—ज्ञान एवं विज्ञानके आधार। १९५. **तेजोराशिः**—तेजपुंज। १९६. **जगत्पतिः**—संसारके स्वामी॥ १३९॥

भक्तलोकप्रसन्नात्मा भक्तमन्दारविग्रहः।
भक्तदारिद्र्यदमनो भक्तानां प्रीतिदायकः॥ १४०॥

१९७. **भक्तलोकप्रसन्नात्मा**—भक्तजनोंकी आत्माको प्रसन्न रखनेवाले। १९८. **भक्तमन्दारविग्रहः**—

भक्तजनोंके लिये कल्पवृक्षस्वरूप। ९९९. **भक्तदारिद्र्यदमनः**—भक्तोंके दैन्यभावको दूर करनेवाले। १०००. **भक्तानां प्रीतिदायकः**—भक्तोंको प्रीति प्रदान करनेवाले॥ १४०॥

भक्ताधीनमनाः पूज्यो भक्तलोकशिवङ्करः।
भक्ताभीष्टप्रदः सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः॥ १४१॥

१००१. **भक्ताधीनमनाः**—भक्तोंके अधीन मनवाले। १००२. **पूज्यः**—पूजनीय। १००३. **भक्तलोकशिवङ्करः**—भक्तोंका कल्याण करनेवाले। १००४. **भक्ताभीष्टप्रदः**—भक्तोंकी अभिलाषाको पूर्ण करनेवाले। १००५. **सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः**—भक्तोंके पापसमूहका नाश करनेवाले॥ १४१॥

अपारकरुणासिन्धुर्भगवान्भक्ततत्परः॥ १४२॥

१००६. **अपारकरुणासिन्धुः**—अपार करुणाके समुद्र। १००७. **भगवान्**—ऐश्वर्यशाली। १००८. **भक्ततत्परः**—भक्तपरायण॥ १४२॥

॥ इति श्रीसम्मोहनतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

॥ इस प्रकार श्रीसम्मोहनतन्त्रके अन्तर्गत पार्वती-ईश्वर-संवादमें श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्र पूर्ण हुआ॥

माहात्म्यम्

इति श्रीराधिकानाथसहस्रं नामकीर्तनम्।
स्मरणात्पापराशीनां खण्डनं मृत्युनाशनम्॥ १ ॥
वैष्णवानां प्रियकरं महारोगनिवारणम्।
ब्रह्महत्या सुरापानं परस्त्रीगमनं तथा॥ २ ॥
परद्रव्यापहरणं परद्वेषसमन्वितम्।
मानसं वाचिकं कायं यत्पापं पापसम्भवम्॥ ३ ॥
सहस्रनामपठनात्सर्वं नश्यति तत्क्षणात्।

इस प्रकार यह श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्र है, जिसके स्मरण करनेमात्रसे पापसमूहोंका तथा मृत्युका नाश हो जाता है। यह श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्र विष्णुभक्तोंका कल्याण करनेवाला तथा महारोगोंका निवारण करनेवाला है। ब्रह्महत्या, सुरापान, परस्त्रीगमन, दूसरेके द्रव्यका हरण, दूसरोंसे द्वेष, मन-वाणी-शरीरसे कृत पाप तथा जिस किसी भी प्रकारसे जो पाप होता है, वह सब इस सहस्रनामके पढ़नेसे उसी क्षण नष्ट हो जाता है॥ १—३ $^{1}/_{2}$ ॥

महादारिद्र्ययुक्तो यो वैष्णवो विष्णुभक्तिमान्॥ ४॥
कार्तिक्यां सम्पठेद्रात्रौ शतमष्टोत्तरं क्रमात्।
पीताम्बरधरो धीमान्सुगन्धिपुष्पचन्दनैः॥ ५॥
पुस्तकं पूजयित्वा तु नैवेद्यादिभिरेव च।
राधाध्यानाङ्कितो धीरो वनमालाविभूषितः॥ ६॥
शतमष्टोत्तरं देवि पठेन्नामसहस्रकम्।

जो वैष्णव महान् दरिद्रतासे युक्त है, उसे विष्णुभक्तिसे सम्पन्न होकर कार्तिक महीनेमें रात्रिकालमें इसका क्रमसे एक सौ आठ बार पाठ करना चाहिये। हे देवि! बुद्धिमान्‌को चाहिये कि पीताम्बर धारण करके तथा वनमालासे विभूषित होकर गन्ध, पुष्प, चन्दन तथा नैवेद्य आदिसे गोपालसहस्रनामस्तोत्र-पुस्तककी पूजा करके राधाके ध्यानमें लीन होकर धैर्यपूर्वक इस सहस्रनामका एक सौ आठ बार पाठ करे॥ ४—६ $^{1}/_{2}$ ॥

तुलसीमालया युक्तो वैष्णवो भक्तितत्परः॥ ७॥
रविवारे च शुक्रे च द्वादश्यां श्राद्धवासरे।
ब्राह्मणं पूजयित्वा च भोजयित्वा विधानतः॥ ८॥
यः पठेद्वैष्णवो नित्यं स याति हरिमन्दिरम्।

जो वैष्णव तुलसीमाला धारण करके भक्तिपूर्वक रविवार, शुक्रवार, द्वादशीतिथिको अथवा श्राद्धके दिन विधानके साथ ब्राह्मणका पूजन करके उन्हें भोजन कराकर इस गोपालसहस्त्रनामका नित्य पाठ करता है, वह विष्णुलोकको प्राप्त होता है॥ ७-८१/२॥

कृष्णेनोक्तं राधिकायै मयि प्रोक्तं पुरा शिवे॥ ९॥
नारदाय मया प्रोक्तं नारदेन प्रकाशितम्।
मया त्वयि वरारोहे प्रोक्तमेतत्सुदुर्लभम्॥ १०॥

हे शिवे! इसे पहले श्रीकृष्णने राधिकासे कहा था, उसीको मैंने तुमसे कह दिया। इस रहस्यको मैंने नारदजीसे कहा और नारदजीने इसका [सम्पूर्ण संसारमें] प्रचार किया। हे वरारोहे! इस अत्यन्त

दुर्लभ रहस्यको मैंने तुमसे कहा है॥ ९-१०॥

गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कथञ्चन।
शठाय पापिने चैव लम्पटाय विशेषतः॥ ११॥
न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन।
देयं शिष्याय शान्ताय विष्णुभक्तिरताय च॥ १२॥

इस रहस्यको प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखना चाहिये और किसी प्रकार भी प्रकट नहीं करना चाहिये। इसे किसी मूर्ख, पापी और विशेषरूपसे लम्पट व्यक्तिको कभी भी नहीं प्रदान करना चाहिये, अपितु शान्तस्वभाव तथा विष्णुकी भक्तिसे युक्त शिष्यको ही इसका उपदेश करना चाहिये॥ ११-१२॥

गोदानब्रह्मयज्ञादेर्वाजपेयशतस्य च।
अश्वमेधसहस्रस्य फलं पाठे भवेद् ध्रुवम्॥ १३॥

इस सहस्रनामस्तोत्रके पाठ करनेसे गोदान, ब्रह्मयज्ञ आदि, सैकड़ों वाजपेय एवं हजारों अश्वमेधयज्ञोंके

करनेका फल निश्चित रूपसे प्राप्त होता है॥ १३॥

एकादश्यां नरः स्नात्वा सुगन्धिद्रव्यतैलकैः।
आहारं ब्राह्मणे दत्त्वा दक्षिणां स्वर्णभूषणम्॥ १४॥
तत आरम्भकर्ताऽस्मात् सर्वं प्राप्नोति मानवः।
शतावृत्तं सहस्रं च यः पठेद्वैष्णवो जनः॥ १५॥
श्रीवृन्दावनचन्द्रस्य प्रसादात्सर्वमाप्नुयात्।

सुगन्धित द्रव्योंका तैल लगाकर जो व्यक्ति एकादशीके दिन स्नान करके ब्राह्मणको भोजन कराकर दक्षिणा तथा सुवर्णका आभूषण प्रदान करनेके अनन्तर गोपालसहस्रनामस्तोत्र-पाठका प्रारम्भ करता है, वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है। जो वैष्णव व्यक्ति इसकी एक सौ अथवा एक हजार आवृत्ति करता है, वह श्रीवृन्दावनचन्द्र भगवान् श्रीकृष्णकी कृपासे सब कुछ प्राप्त कर लेता है॥ १४-१५$^1/_2$॥

यद्गृहे पुस्तकं देवि पूजितं चैव तिष्ठति॥ १६॥
न मारी न च दुर्भिक्षं नोपसर्गभयं क्वचित्।
सर्पादिभूतयक्षाद्या नश्यन्ति नात्र संशयः॥ १७॥
श्रीगोपालो महादेवि वसेत्तस्य गृहे सदा।
गृहे यत्र सहस्रं च नाम्नां तिष्ठति पूजितम्॥ १८॥

हे देवि! जिस घरमें इस सहस्रनामस्तोत्रपुस्तककी नित्य पूजा होती है; वहाँ महामारी, दुर्भिक्ष तथा किसी प्रकारके उपद्रवका भय नहीं रहता और सर्प, भूत, यक्ष आदि नष्ट हो जाते हैं; इसमें संशय नहीं है। हे महादेवि! जिसके घरमें इस सहस्रनामपुस्तककी नित्य पूजा होती रहती है, उसके घरमें गोपाल श्रीकृष्ण सदा निवास करते हैं॥ १६—१८॥

॥ इति श्रीसम्मोहनतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रस्य माहात्म्यं सम्पूर्णम्॥

॥ इस प्रकार श्रीसम्मोहनतन्त्रके अन्तर्गत पार्वती-ईश्वर-संवादमें श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रका माहात्म्य पूर्ण हुआ॥

श्रीसूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १॥

हे जातवेदा (सर्वज्ञ) अग्निदेव! आप सुवर्णके समान रंगवाली, किंचित् हरितवर्णविशिष्टा, सोने और चाँदीके हार पहननेवाली, चन्द्रवत् प्रसन्नकान्ति, स्वर्णमयी लक्ष्मीदेवीका मेरे लिये आवाहन करें॥ १॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ २॥

हे अग्ने! उन लक्ष्मीदेवीका, जिनका कभी विनाश नहीं होता तथा जिनके आगमनसे मैं सोना, गौ, घोड़े तथा पुत्रादिको प्राप्त करूँगा, मेरे लिये आवाहन करें॥ २॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥ ३॥

जिन देवीके आगे घोड़े तथा उनके पीछे रथ रहते हैं तथा जो हस्तिनादको सुनकर प्रमुदित होती हैं,

उन्हीं श्रीदेवीका मैं आवाहन करता हूँ; लक्ष्मीदेवी मुझे प्राप्त हों॥ ३॥

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ४॥

जो साक्षात् ब्रह्मरूपा, मन्द-मन्द मुसकरानेवाली, सोनेके आवरणसे आवृत, दयार्द्र, तेजोमयी, पूर्णकामा, भक्तानुग्रहकारिणी, कमलके आसनपर विराजमान तथा पद्मवर्णा हैं, उन लक्ष्मीदेवीका मैं यहाँ आवाहन करता हूँ॥ ४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्र पद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥ ५॥

मैं चन्द्रके समान शुभ्र कान्तिवाली, सुन्दर द्युतिशालिनी, यशसे दीप्तिमती, स्वर्गलोकमें देवगणोंके द्वारा पूजिता, उदारशीला, पद्महस्ता लक्ष्मीदेवीकी शरण ग्रहण करता हूँ। मेरा दारिद्र्य दूर हो जाय। मैं आपको शरण्यके रूपमें वरण करता हूँ॥ ५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥ ६॥

हे सूर्यके समान प्रकाशस्वरूपे! आपके ही तपसे वृक्षोंमें श्रेष्ठ मंगलमय बिल्ववृक्ष उत्पन्न हुआ।

उसके फल आपके अनुग्रहसे हमारे बाहरी और भीतरी दारिद्र्यको दूर करें॥ ६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥ ७॥

हे देवि! देवसखा कुबेर और उनके मित्र मणिभद्र तथा दक्ष-प्रजापतिकी कन्या कीर्ति मुझे प्राप्त हों अर्थात् मुझे धन और यशकी प्राप्ति हो। मैं इस राष्ट्रमें— देशमें उत्पन्न हुआ हूँ, मुझे कीर्ति और ऋद्धि प्रदान करें॥ ७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्॥ ८॥

लक्ष्मीकी ज्येष्ठ बहिन अलक्ष्मी (दरिद्रताकी अधिष्ठात्री देवी)-का, जो क्षुधा और पिपासासे मलिन— क्षीणकाय रहती हैं, मैं नाश चाहता हूँ। देवि! मेरे घरसे सब प्रकारके दारिद्र्य और अमंगलको दूर करो॥ ८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥ ९॥

सुगन्धित जिनका प्रवेशद्वार है, जो दुराधर्षा तथा नित्यपुष्टा हैं और जो गोमयके बीच निवास करती हैं, सब भूतोंकी स्वामिनी उन लक्ष्मीदेवीका मैं अपने घरमें आवाहन करता हूँ॥ ९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥ १०॥

मनकी कामनाओं और संकल्पकी सिद्धि एवं वाणीकी सत्यता मुझे प्राप्त हो; गौ आदि पशुओं एवं विभिन्न अन्नों—भोग्य पदार्थोंके रूपमें तथा यशके रूपमें श्रीदेवी हमारे यहाँ आगमन करें॥ १०॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥

लक्ष्मीके पुत्र कर्दमकी हम सन्तान हैं। कर्दमऋषि! आप हमारे यहाँ उत्पन्न हों तथा पद्मोंकी माला धारण करनेवाली माता लक्ष्मीदेवीको हमारे कुलमें स्थापित करें॥ ११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२॥

जल स्निग्ध पदार्थोंकी सृष्टि करे। लक्ष्मीपुत्र चिक्लीत! आप भी मेरे घरमें वास करें और माता लक्ष्मीदेवीका मेरे कुलमें निवास करायें॥ १२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १३॥

हे अग्ने! आर्द्रस्वभावा, कमलहस्ता, पुष्टिरूपा, पीतवर्णा, पद्मोंकी माला धारण करनेवाली, चन्द्रमाके

समान शुभ्र कान्तिसे युक्त, स्वर्णमयी लक्ष्मीदेवीका मेरे यहाँ आवाहन करें॥ १३॥

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥ १४॥

हे अग्ने! जो दुष्टोंका निग्रह करनेवाली होनेपर भी कोमल स्वभावकी हैं, जो मंगलदायिनी, अवलम्बन प्रदान करनेवाली यष्टिरूपा, सुन्दर वर्णवाली, सुवर्णमालाधारिणी, सूर्यस्वरूपा तथा हिरण्यमयी हैं, उन लक्ष्मीदेवीका मेरे लिये आवाहन करें॥ १४॥

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥ १५॥

हे अग्ने! कभी नष्ट न होनेवाली उन लक्ष्मीदेवीका मेरे लिये आवाहन करें, जिनके आगमनसे बहुत-सा धन, गौएँ, दासियाँ, अश्व और पुत्रादि हमें प्राप्त हों॥ १५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्॥ १६॥

जिसे लक्ष्मीकी कामना हो, वह प्रतिदिन पवित्र और संयमशील होकर अग्निमें घीकी आहुतियाँ दे तथा इन पन्द्रह ऋचाओंवाले श्रीसूक्तका निरन्तर पाठ करे॥ १६॥

पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सं नि धत्स्व॥ १७॥

कमल-सदृश मुखवाली! कमल-दलपर अपने चरणकमल रखनेवाली! कमलमें प्रीति रखनेवाली! कमल-दलके समान विशाल नेत्रोंवाली! समग्र संसारके लिये प्रिय! भगवान् विष्णुके मनके अनुकूल आचरण करनेवाली! आप अपने चरणकमलको मेरे हृदयमें स्थापित करें॥ १७॥

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥ १८॥

कमलके समान मुखमण्डलवाली! कमलके समान ऊरुप्रदेशवाली! कमल-सदृश नेत्रोंवाली! कमलसे आविर्भूत होनेवाली! पद्माक्षि! आप उसी प्रकार मेरा पालन करें, जिससे मुझे सुख प्राप्त हो॥ १८॥

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे॥ १९॥

अश्वदायिनी, गोदायिनी, धनदायिनी, महाधनस्वरूपिणी हे देवि! मेरे पास [सदा] धन रहे, आप मुझे सभी अभिलषित वस्तुएँ प्रदान करें॥ १९॥

पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे॥ २०॥

आप प्राणियोंकी माता हैं। मेरे पुत्र, पौत्र, धन, धान्य, हाथी, घोड़े, खच्चर तथा रथको दीर्घ आयुसे सम्पन्न करें॥ २०॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना॥ २१॥

अग्नि, वायु, सूर्य, वसुगण, इन्द्र, बृहस्पति, वरुण तथा अश्विनीकुमार—ये सब वैभवस्वरूप हैं॥ २१॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥ २२॥

हे गरुड! आप सोमपान करें। वृत्रासुरके विनाशक इन्द्र सोमपान करें। वे गरुड तथा इन्द्र धनवान् सोमपान करनेकी इच्छावालेके सोमको मुझ सोमपानकी अभिलाषावालेको प्रदान करें॥ २२॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तजापिनाम्॥ २३॥

भक्तिपूर्वक श्रीसूक्तका जप करनेवाले, पुण्यशाली लोगोंको न क्रोध होता है, न ईर्ष्या होती है, न लोभ ग्रसित कर सकता है और न उनकी बुद्धि दूषित ही होती है॥ २३॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्र सीद मह्यम्॥ २४॥

कमलवासिनी, हाथमें कमल धारण करनेवाली, अत्यन्त धवल वस्त्र, गन्धानुलेप तथा पुष्पहारसे सुशोभित होनेवाली, भगवान् विष्णुकी प्रिया लावण्यमयी तथा त्रिलोकीको ऐश्वर्य प्रदान करनेवाली हे भगवति! मुझपर प्रसन्न होइये॥ २४॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम्॥ २५॥

भगवान् विष्णुकी भार्या, क्षमास्वरूपिणी, माधवी, माधवप्रिया, प्रियसखी, अच्युतवल्लभा, भू-देवी भगवती लक्ष्मीको मैं नमस्कार करता हूँ॥ २५॥

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्र चोदयात्॥ २६॥

हम विष्णुपत्नी महालक्ष्मीको जानते हैं तथा उनका ध्यान करते हैं। वे लक्ष्मीजी [सन्मार्गपर चलनेहेतु] हमें प्रेरणा प्रदान करें॥ २६॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः॥ २७॥

पूर्व कल्पमें जो आनन्द, कर्दम, श्रीद और चिक्लीत नामक विख्यात चार ऋषि हुए थे। उसी नामसे दूसरे कल्पमें भी वे ही सब लक्ष्मीके पुत्र हुए; बादमें उन्हीं पुत्रोंसे महालक्ष्मी अतिप्रकाशमान् शरीरवाली हुईं, उन्हीं महालक्ष्मीसे देवता भी अनुगृहीत हुए॥ २७॥

ऋणरोगादिदारिद्र्यपापक्षुदपमृत्यवः।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥ २८॥

ऋण, रोग, दरिद्रता, पाप, क्षुधा, अपमृत्यु, भय, शोक तथा मानसिक ताप आदि—ये सभी मेरी बाधाएँ सदाके लिये नष्ट हो जायँ॥ २८॥

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधाच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः॥ २९॥

भगवती महालक्ष्मी [मानवके लिये] ओज, आयुष्य, आरोग्य, धन-धान्य, पशु, अनेक पुत्रोंकी प्राप्ति तथा सौ वर्षके दीर्घ जीवनका विधान करें और मानव इनसे मण्डित होकर प्रतिष्ठा प्राप्त करे॥ २९॥

॥ इति ऋक्परिशिष्टोक्तं श्रीसूक्तं सम्पूर्णम्॥

॥ इस प्रकार ऋक्परिशिष्टमें कथित श्रीसूक्त सम्पूर्ण हुआ॥